हिन्दी गौरव

(क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका)

अंक: 04 (वर्ष: 2020-21) शक संवत 1942-43

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़

(भारत सरकार, विदेश मंत्रालय)

पत्रिका के तीसरे अंक के विमोचन के अवसर पर माननीय राज्यपाल (हरियाणा) महोदय को कार्यालय की ओर से प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

माननीय राज्यपाल (हरियाणा) महोदय अपने कर कमलों से कार्यालय की गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के तीसरे अंक का विमोचन करते हुए।

हिन्दी गौरव

(भारत सरकार, विदेश मंत्रालय)
(क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका)
अंक: 04 (वर्ष : 2020-21)

मुख्य संरक्षक
श्री शिवास कविराज, (भा.पु.से.)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

संरक्षक
श्री अमित कुमार रावत
उप पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

सह-संरक्षक
श्री सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक (प्रशा.)

संपादक
श्री कृष्णा जी पाण्डेय
क. हिंदी अनुवादक

पत्र व्यवहार का पता:-

संपादक, हिन्दी गौरव
क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय
(भारत सरकार, विदेश मंत्रालय)
एस.सी.ओ. 28-32, सेक्टर 34-ए, चंडीगढ़-160022

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अथवा दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। इससे कार्यालय, विभाग अथवा संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सीमित एवं निःशुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका/विषय सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1	संदेश : माननीय विदेश राज्य मंत्री	1
2	संदेश : सचिव (सीपीवी एवं ओआईए)	2
3	संदेश : अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त उत्तर पश्चिम क्षेत्र, चंडीगढ़	3
4	संदेश : अपर सचिव (प्रशासन) [पूर्व अपर सचिव (पीएसपी) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी]	4
5	संदेश : संयुक्त सचिव (पीएसपी) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी	5
6	शुभकामना संदेश : संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)	6
7	क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ का संदेश	7
8	उप पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ का संदेश	8
9	सह- संरक्षक की कलम से	9
10	क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कार	10
11	संपादकीय	11
12	क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की उपलब्धियाँ	12
13	हिंदी : बढ़ता वैश्विक दायरा, बढ़ते अवसर	13
14	हिंदी पखवाड़ा-2020 की झलकियाँ	13
15	विदेश मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए विशेष कार्य : मोहन लाल मीना, सहायक निदेशक, विदेश मंत्रालय	14-17
16	खुश रहने के दस मंत्र : कुमारी साधना शुक्ला, वरिष्ठ अधीक्षक	18
17	स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन	18
18	यह घड़ी भी बीत जाएगी : श्री सहदेव कौशिक, वरिष्ठ अधीक्षक	19
19	प्रदूषण कैसे हो कम : रामदास, सहायक अधीक्षक	20
20	मेरा पन्ना : विनीत सैन, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	20
21	स्वच्छ भारत : जितेन्द्र, सहायक अधीक्षक	21
22	स्वच्छता और हम : रेनू यादव, सहायक अधीक्षक	21
23	समय : रमेश कुमारी, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	22
24	बेटी : ममता, सहायक अधीक्षक	23
25	क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना : रोशन सिंह, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	23
26	अब भी चेतो हे इंसान! : भगवती प्रसाद, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	24
27	अभिनंदन है : जयवीर सिंह भंडारी, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	24
28	कोरोना : सुखदेव कुमार, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	25
29	नारी का शोषण जारी है : रमनदीप कौर, सहायक अधीक्षक	25
30	ईश्वर : विनीत जैन, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	26
31	संगत का असर : प्रफुल चंद्र साह, सहायक अधीक्षक	26
32	कार्यालय की राजभाषा पत्रिका [हिन्दी गौरव] का विमोचन	27
33	सूचना का अधिकार : संजय कुमार, सहायक अधीक्षक	28-29
34	कोविड् युग में भारत की आर्थिक स्थिति : राजीव खेतरपाल, सहायक अधीक्षक	30
35	पासपोर्ट सेवा दिवस – 2020 (24 जून, 2020)	31
36	क्या आप जानते हैं???	32
37	प्रदूषण :: एक व्यापक समस्या : रमेश चंद्र, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	32
38	रक्तदान :: जीवन जिंदगी का महादान : गगनदीप नारंग, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	33
39	सफलता का सूत्र : कंचन शर्मा, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	34
40	करें योग, रहें निरोग : राकेश कुमार, कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक	34
41	कोरोना काल में मानव जीवन : रुपलाल, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	35
42	भारत के गाँव, गाँवों में भारत : स्वरूप चंद्र मेहता, सहायक अधीक्षक	36
43	कोरोना से क्या सीखें? : श्री स्वरूप चंद मेहता	36
44	ऑनलाइन कक्षाओं को रोचक बनाएं : वीना, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	37
45	कोरोना :: एक वैश्विक महामारी : कैलाश कुमार, सहायक अधीक्षक	38
46	उलझन : सोनम तोमर, वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक	39
47	कोरोना : समुचित बचाव ही वर्तमान में इलाज : कर्मवीर सिंह, कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक	39
48	प्राणायाम :: श्वास की कला : अमृता शर्मा, सहायक अधीक्षक	40
49	हैकिंग : विभूति डोगरा, आई. टी. अभियंता (टी.सी.एस.)	41
50	बच्चों में नशे की रोकथाम हेतु हमारी भूमिका : जगजीत सिंह, वरिष्ठ अधीक्षक	42
51	सतर्कता शपथ	42
52	अतुकांत : श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. हिंदी अनुवादक	43
53	स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन एवं बच्चों का कोना	44
54	पत्रिका के तीसरे अंक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएँ	45
55	कलाकृतियाँ	46

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

विदेश राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs
Government of India

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह सुखद है कि भारत सरकार द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन के लिए जारी दिशा-निर्देशों के अनुपालन में चंडीगढ़ कार्यालय अपनी सशक्त भूमिका निभा रहा है। जिसके फलस्वरूप विदेश मंत्रालय द्वारा चंडीगढ़ कार्यालय को लगातार दो वर्ष पुरस्कृत किया गया है। मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आगे भी इस हेतु प्रतिबद्ध रहने की अपेक्षा करता हूँ।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे कार्मिकों की रचनात्मकता का दर्पण बनेगी और सभी को राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी। अंत में मैं ' हिन्दी गौरव' पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

वी. मुरलीधरन

Office : South Block, New Delhi-110 011. Tel. : 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax : 011-23011425

Sanjay Bhattacharyya
Secretary (CPV & OIA)

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
Ministry of State for External Affairs
Government of India

संदेश

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की राजभाषा पत्रिका "हिन्दी गौरव" का चतुर्थ अंक का प्रकाशन होने जा रहा है।

हमारे पासपोर्ट कार्यालय सरकार की पासपोर्ट तथा पासपोर्ट सेवा जैसी जन कल्याणकारी योजनाओं और नीति-निर्देशों को तत्परता से आम जन मानस तक पहुँचा रहे हैं। राजभाषा का प्रयोग इन कार्यों को सरल तथा सुविधाजनक रूप में जनसाधारण तक पहुँचाने में सहज बनाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "हिन्दी गौरव" का चतुर्थ अंक राजभाषा के प्रचार -प्रसार सहित इसके संवर्धन में सहायक सिद्ध होगा। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

दिनांक 06 नवंबर 2020

नई दिल्ली

संजय भट्टाचार्य

संजय भट्टाचार्य
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

टेलिफैक्स : 0172-2544517, 2544499

भारत सरकार/GOVT. OF INDIA
आयकर विभाग/INCOME TAX DEPARMENT
अध्यक्ष,नराकास एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय(उ.प्र. क्षेत्र), आयकर भवन, सेक्टर-17-ई,चण्डीगढ़
O/o The Chairman, TOLIC & Pr. CCIT (NWR), Aayakar Bhawan, Sector-17-E, Chandigarh

सुनीता पुरी
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

दिनांक 16.09.2020

शुभ संदेश

यह हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। वैश्विक पटल पर हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता और केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग हमारे द्वारा मिलकर किए गए प्रयासों से ही संभव हुआ है।

इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए तथा अपने संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करते हुए हमें अपने कार्य-व्यवहार में राजभाषा हिंदी के प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिकों तक सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी पहुँच सके। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों के सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों और कार्यकलापों से सभी अवगत होते हैं।

आशा है कि " हिंदी गौरव" अपने उद्देश्य में सफल होगी। पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सुनीता पुरी

सुनीता पुरी

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोग के प्रति प्रतिबद्धता को चिन्हित करता है।

सरकारी कार्यालयों द्वारा राजभाषा संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा के प्रगामी अनुप्रयोग को बढ़ावा मिलता है साथ ही साथ हिन्दी में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्साह में भी वृद्धि होती है जिससे अन्य अधिकारी कर्मचारी भी प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा ही है। इस आलोक में भी राजभाषा पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी संवृद्धि की दिशा में एक सार्थक कदम सिद्ध होता है। ऐसा किए जाने से लेखकीय प्रतिभा संपन्न अधिकारियों/कर्मचारियों को एक मंच की उपलब्धता सुनिश्चित होती है जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता है।

मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा अनुप्रयोग के प्रति सार्थक माहौल बनेगा। इससे ना केवल कार्यालय-कर्मी बल्कि आम-जन मानस भी लाभान्वित होगा। पत्रिका के प्रकाशक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

अरुण कुमार चटर्जी

(अरुण कुमार चटर्जी)
अपर सचिव (प्रशासन)
पूर्व अपर सचिव (पी.एस.पी.) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के चौथे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के प्रति कार्यालय के निष्ठा का परिचायक है।

सरकारी कार्यालयों द्वारा राजभाषा संबंधी पत्र/पत्रिकाओं के प्रकाशन से न केवल राजभाषा के प्रगामी अनुप्रयोग को बढ़ावा मिलता है बल्कि हिन्दी में काम करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों का उत्साह वर्धन भी होता है। ऐसा होने पर कार्यालय का दैनिक काम-काज सुविधाजनक वातावरण में संपन्न होने लगता है।

पासपोर्ट कार्यालय, वृहद जन-संपर्क के कार्यालय हैं। ऐसे कार्यालयों द्वारा सरकारी कार्य राजभाषा में संपन्न किए जाने से आम जन मानस को सुविधा होती है तथा निज भाषा में कार्य करने से कार्य में सुगमता का भी अनुभव होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा के प्रगामी अनुप्रयोग के प्रति गंभीर माहौल बनेगा। इस पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के लिए कार्यालय को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

जयंत एन. खोबरागड़े

(जयंत एन. खोबरागड़े)
संयुक्त सचिव (पीएसपी) एवं
मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सजीव बाबु कुरुप
संयुक्त सचिव (आरबीबी, आई एंड टी)
दूरभाष : 011-49016623
ई-मेल : jshindi@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

शुभकामना संदेश

मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ अपनी गृह पत्रिका 'हिंदी गौरव' के चौथे अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका मंत्रालय में नियमित रूप से प्राप्त हो रही है और यह भी अवगत कराना है कि हमारे प्रभाग में इस पत्रिका को खूब पढ़ा जा रहा है।

पत्रिका के हर अंक को ज्ञानवर्धक और रुचि पूर्ण बनाने की चुनौती पत्रिका के संपादक को रहती है। आपकी इस पत्रिका में साहित्य की हर विधा का समावेश होता है। इससे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ-साथ मंत्रालय के पाठक भी लाभान्वित हो रहे हैं।

मुझे आशा है कि आप पत्रिका को साहित्य की दृष्टि से रंग बिरंगी बनाकर पाठकों के समक्ष पेश करते रहेंगे। मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ परिवार की सतत प्रगति की कामना करते हुए, पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक बनने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

सजीव बाबु कुरुप

सजीव बाबु कुरुप

शिवास कविराज, (भा.पु.से.)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चण्डीगढ़
Sibas Kabiraj, (I.P.S.)
Regional Passport Officer, Chandigarh

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

संदेश

यह बताते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ अपनी वार्षिक गृह पत्रिका 'हिन्दी गौरव' के चौथे अंक का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन में राजभाषा पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्मिकों की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में सामने आती है। इससे उनमें रचनात्मकता भी बढ़ती है।

विदेश मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग (भारत सरकार, गृह मंत्रालय) द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के आलोक में राजभाषा का प्रसार-प्रचार एवं इसका प्रयोग बढ़ाना हमेशा से मेरी प्राथमिकता रही है। हमारे अधिकारियों और कार्मिकों के साथ-साथ जन साधारण द्वारा भी इस कार्य में उत्साहपूर्वक भाग लेने से सुखद परिणाम देखने को मिले हैं। इस नाते हमारी जिम्मेदारियाँ और बढ़ जाती हैं।

'विदेश मंत्रालय' ने 'विश्व हिंदी दिवस' (10 जनवरी, 2020) के अवसर पर हमारे कार्यालय को 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में इस वर्ष भी प्रथम पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। राजभाषा के क्रियान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग हेतु उल्लेखनीय योगदान के लिए कार्यालय को लगातार दो वर्ष पुरस्कार मिलना हमें न केवल उर्जस्वित करता है बल्कि इससे हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ जाती हैं। 'हिंदी गौरव' पत्रिका का प्रकाशन इन्हीं जिम्मेदारियों के निर्वहन में से एक है। पुरस्कार से हमारा मनोबल तो बढ़ता ही है, यह हमें अपने प्रयासों में निरंतरता लाने हेतु भी प्रेरित करते हैं।

जब जन साधारण से हिंदी के लिए हमारे प्रयासों को सराहना मिलती है तो हमें सही दिशा में प्रयासरत होने का पता चलता है। हमने पहले भी प्रयास किए है, अब भी कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। हाँ, हमारे समक्ष कई चुनौतियाँ हैं परंतु हम उनका डटकर सामना कर रहे हैं। मैं आशान्वित हूँ कि हमारे सभी अधिकारी एवं कार्मिक समय-समय पर आयोजित हिंदी की विभिन्न गतिविधियों में न केवल बढ़-चढ़कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते रहेंगे बल्कि दैनिक कार्यालयीन कार्य, विशेषकर राजभाषा के क्रियान्वयन एवं प्रयोग, में अपना सहज सहयोग प्रदान करते रहेंगे। अंत में, मैं, पत्रिका के प्रकाशन हेतु सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

'जय हिंद'

शिवास

शिवास कविराज

अमित कुमार रावत
उप पासपोर्ट अधिकारी, चण्डीगढ़
Amit Kumar Rawat
Dy. Passport Officer, Chandigarh

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

संदेश

मुझे यह जानकार अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'हिन्दी गौरव' का चौथा अंक प्रकाशित हो रहा है।

विगत कुछ माह से कोविड-19 महामारी के चलते पूरी दुनिया मानो थम सी गई है। चिकित्सा विशेषज्ञों की माने तो टीका (वैक्सिन) की खोज होने तक परिस्थितियाँ सामान्य होने में अभी समय लग सकता है। तब तक हर किसी को सतर्क होकर स्वयं के साथ-साथ औरों को भी इस महामारी से बचाने के लिए एकजुट रहना है।

राजभाषा के कार्यान्वयन में हमारा कार्यालय प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। कार्यालय राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु हमेशा तत्पर रहा है। ई-मेल के माध्यम से किए जा रहे पत्राचार में हिन्दी को प्रमुखता दी जा रही है। सूचनापट्ट पर अर्थ सहित 'आज का शब्द' लिखा जा रहा है। कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए आयोजित 'हिंदी कार्यशाला' में राजभाषा एवं युनिकोड से संबंधित जानकारी, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण का अभ्यास करना आदी शामिल होता है। इस दौरान मंत्रालय/राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के बारे में भी जागरूक किया जाता है। इतना ही नहीं ऑनलाइन माध्यम से भी हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। इसका सीधा लाभ विशेषकर पासपोर्ट सेवा केंद्रों में तैनात कार्मिकों को और साधारण तौर पर आम जन को हो रहा है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मानना है कि "भारतवर्ष की राजभाषा चाहे जो हो और जैसी भी हो पर इतना निश्चित है कि भारतवर्ष की केन्द्रीय भाषा हिंदी है। लगभग आधा भारतवर्ष उसे अपनी साहित्यिक भाषा मानता है, साहित्यिक भाषा अर्थात् उसके हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने वाली, करोड़ों की आशा-आकांक्षा, अनुराग-विराग, रुदन-हास्य की भाषा।" केवल भारत ही नहीं, विश्व के अन्य भागों में भी हिंदी बोलने-लिखने-समझने वाले लोगों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है। विश्व के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। परिवर्तन की यह बयार चलती रहे, बहती रहे। और भी लोग इस परिवर्तन से स्वयं जुड़ें तथा औरों को जोड़ते रहें, यही अपेक्षा है।

अंत में, मैं पत्रिका के संपादक एवं इसके प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों/व्यक्तियों को बधाई और भावी पाठकगण को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

'जय हिंद'

अमित कुमार

(अमित कुमार रावत)

सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक
Sehdev Kaushik
Senior Supdt.

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय
चण्डीगढ़
Regional Passport Office
Chandigarh

सह-संरक्षक की कलम से

कार्यालय अपनी गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन करे, इस पर किसे गौरव का बोध नहीं होता। मुझे यह जानकार अपार हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की अपनी गृह पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है।

हमारे देश की सामासिक संस्कृति, कला एवं राजनय के प्रचार-प्रसार में हमारी भाषाओं ने महती भूमिका निभाई है। वैश्विक स्तर पर हिंदी का विस्तार बढ़ता जा रहा है। इसे जन-जन से लेकर विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने में हिंदी सेवी, हिंदी प्रेमी एवं स्वयंसेवी संस्थायें सतत प्रयासरत हैं।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रणेता तथा युग पुरुष पंडित मदनमोहन मालवीय के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहते थे "पंडित मदनमोहन मालवीय का अंग्रेजी भाषण चाँदी की तरह चमकता हुआ कहा जाता है, किन्तु उनका हिंदी भाषण इस तरह चमका है, जैसे मानसरोवर से निकलती हुई गंगा का प्रवाह सूर्य की किरणों से सोने की तरह चमकता है।"

कोविड-19 के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों के कारण हर ओर नवाचार को प्राथमिकता दी जा रही है। डिजिटल और ऑनलाइन माध्यमों को सहजता से अपनाया जा रहा है। बच्चों की कक्षाएं ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं, अधिकतर सरकारी बैठकें भी ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की जा रही हैं। हमारे कार्यालय में भी हिंदी पखवाड़ा-2020 के दौरान प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। प्रतियोगिता के ऑनलाइन आयोजन से अधिकारी और कर्मचारी गण ने अपने कर्तव्य स्थल से ही इसमें सहभागिता की। यह कदम नया है, दौर भी नया है सहजता से अपने कदम बढ़ाकर इस दौर में आगे बढ़ने की जरूरत है।

मैं आशान्वित हूँ कि हमारी यह पत्रिका सभी पासपोर्ट कार्यालयों, अन्य कार्यालयों एवं जनसाधारण तक पहुँचेगी तथा हिंदी सेवियों के साथ-साथ हिंदी प्रेमियों को भी जोड़ने का काम करेगी। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

श्री सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को पुरस्कार।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विदेश मंत्रालय

विश्व हिंदी दिवस 2020

प्रशस्ति-पत्र

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ को वर्ष 2019 के दौरान 'ख' क्षेत्र में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए, यह प्रशस्ति- पत्र प्रदान किया जाता है।

(वी. मुरलीधरन)
विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार

नई दिल्ली,
10 जनवरी, 2020

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु 'ख' क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ को दिनांक 10.01.2020 को पुरस्कृत किया गया। विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) के अवसर पर दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय विदेश राज्य मंत्री एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वी. मुरलीधरन ने अक्षर चिन्ह और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ एवं श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. हिंदी अनुवादक ने कार्यालय की ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया।

विदेश मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। विदित हो कि पिछले वर्ष भी मंत्रालय इस कार्यालय को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु 'ख' क्षेत्र का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया था।

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ जनसाधारण को पासपोर्ट एवं इससे संबंधित उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं क्रियान्वयन हेतु सदैव समर्पित रहा है तथा आगे भी इस हेतु प्रतिबद्ध रहेगा।

संपादकीय

'हिंदी गौरव' का चतुर्थ अंक प्रस्तुत है : आपकी पत्रिका, आपके समक्ष। इस अंक में रचनाकारों ने विभिन्न विषयों पर अपनी कलम चलायी है, बच्चों ने अपनी कलाकृतियों से रंग भरे हैं। एक ओर कोविड-19 का जनसाधारण पर व्यापक दुष्प्रभाव को अपने-अपने तरीके से अभिव्यक्त किया गया है तो दूसरी ओर प्रदूषण, हैकिंग आदि जैसे ज्वलंत तथा समसामयिक विषय भी शामिल हैं। प्रस्तुत अंक में शामिल रचनाएँ रचनाकारों की कल्पनाओं, उनकी सोच की उड़ान का जीता-जागता उदाहरण है। रचनाओं को यथासंभव यथावत रखने का प्रयास किया गया है। इस अंक में एक 'बच्चों का कोना' भी है, इस कोने में बालकों की स्नेहिल-सुपरिचित मुस्कान, निश्छल हँसी के साथ-साथ अन्य अभिव्यक्तियों का आप सुकून ले सकते हैं।

कार्यालय द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित पखवाड़ा के दौरान बच्चों के लिए 'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया था। हमारे नन्हें मेहमानों ने चित्र उकेरे हैं, उनमें रंग भरे हैं। पत्रिका में अपनी उन्हीं कलाकृतियों के माध्यम से बच्चों ने अपना योगदान भी दिया है, या यूं कहें कि केवल अपना योगदान भर नहीं दिया है। ध्यान से देखने पर आप पाएँगे कि उन्होंने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से बहुत कुछ कहने की कोशिश की है। ये असाधारण सी दिखने-लगने वाली साधारण गलतियों को न करने की सीख भी दे रहे हैं। आप, हमारी तरह, कब से इन बच्चों की बातें सुन-समझकर उनपर अमल करना शुरु करेंगे?

कोविड-19 के कारण जन्मी दुश्वारियाँ नि:संदेह कम नहीं हुई हैं परंतु इसकी श्रृंखला अब कम होती दिख रही है। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि हम अपनी सतर्कता कम कर दें। हमें पहले की अपेक्षा और अधिक सतर्क रहने और इस हेतु औरों को भी जागरूक करने की आवश्यकता है। इस महामारी के प्रकोप को कम करने, इससे निपटने के लिए जी-जान से तत्पर रहे वैसे सभी संबंधित जो आज हमारे बीच नहीं हैं, उनके योगदान और समर्पण को याद करने का समय है। समय उन सभी का आभार व्यक्त करने का भी है जो अपनी जान की परवाह किये बिना अथक डटे-खड़े हैं; और हमारी रक्षा-सुरक्षा कर रहे हैं—बाहरी ताकतों से, अंदरूनी तत्वों से। हमें भी इस हेतु यथासंभव सहयोग देना है, मिल-जुलकर, एकजुट होकर चीटियों की तरह। ठीक 'साथी हाथ बढ़ाना, एक अकेला थक जाएगा मिलकर बोझ उठाना' की तरह। संभवत: 'एकता में शक्ति' का पाठ बचपन में हर किसी ने पढ़ा होगा। अपने व्यवहारिक जीवन में इसका अधिकाधिक उपयोग करने की आवश्यकता है। 'हमारी ताकत और स्थिरता के लिए हमारे सामने जो जरूरी काम हैं उनमें लोगों में एकता और एकजुटता स्थापित करने से बढ़ कर कोई काम नहीं हैं।' यह पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री का मानना था। किसी ने सच कहा है कि एकता निर्बलों को भी शक्ति प्रदान करता है। जुड़ने, जोड़ने और जुड़े रहना हमारी एक अलग पहचान बनाती है। यह कला हमें विरासत में मिली है।

भारत की विविध संस्कृतियों और भाषाओं को सहेजने, समेटने और जीने वाला देश है। हमारे यहाँ संस्कृतियाँ और भाषाएँ वह पुल हैं जो जोड़ने का काम करती हैं। हिंदी भी जोड़ रही है — शब्दों को, शब्दांशों को, किनारों को, एक छोर से दूसरे छोर को, दिलों को, लोगों को। हिंदी ने न केवल भारतीय बल्कि विदेशी भाषाओं के भी कई प्रचलित शब्दों को सहर्ष अंगीकार किया है। इस संबंध में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की उक्ति है "हिंदी चिरकाल से ही ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का कभी बहिष्कार नहीं किया।"

'हिंदी गौरव' के सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं ने हमारा न केवल उत्साहवर्धन किया है बल्कि हमारी कमियों की ओर भी इंगित किया है। पत्रिका को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए हमें आपके बहुमूल्य सुझावों और विचारों की सदैव प्रतीक्षा रहती है। अत: आपसे निवेदन है कि पत्रिका के बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराएं। पत्रिका के प्रकाशन में अपना प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से योगदान देने के लिए सभी का हृदयतल की गहराई से आभार।

(श्री कृष्णा जी पाण्डेय)

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ की उपलब्धियां

शिवास कविराज
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ वर्तमान में हरियाणा राज्य के 12 जिलों, पंजाब राज्य के 11 जिलों तथा चंडीगढ़ (संघ प्रदेश) के पासपोर्ट आवेदकों को पासपोर्ट और संबंधी सेवाएँ प्रदान कर रहा है। कार्यालय के अंतर्गत चार पासपोर्ट सेवा केंद्र अंबाला, चंडीगढ़-I, चंडीगढ़-II एवं लुधियाना में सुचारू रुप से कार्य कर रहे हैं वहीं क्षेत्राधिकार के 12 जिलों के प्रधान/उप डाकघर में डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्रो के माध्यम से भी सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

कार्यालय को गत वर्ष पासपोर्ट एवं संबंधी सेवाओं हेतु प्राप्त कुल 7,12,737 आवेदनों में से 7,02,987 आवेदकों को पासपोर्ट और संबंधी सेवाएं प्रदान की गई।

एक साल में आवेदकों को ससमय पासपोर्ट जारी करना निश्चित तौर पर क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ के लिए गौरव की बात है। यह हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों का परिणाम है। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार भी जनता को पासपोर्ट जारी करने हेतु आवश्यक मानदंडों में समय-समय पर बदलाव करती रहती है ताकि आवेदक को बिना किसी परेशानी के और कम से कम समय में पासपोर्ट एवं संबंधी सेवाओं का समुचित लाभ मिल सके।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसे अधिकाधिक प्रयोग में लाने की दिशा में हमने कई प्रयास किए हैं। इनमें कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन, हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा का आयोजन, तिमाही बैठकों का आयोजन, तिमाही प्रगति रिपोर्टों की निरंतर समीक्षा करना, कार्यालय में लघु पुस्तकालय की स्थापना, आज का शब्द, सामाजिक माध्यमों द्वारा हिंदी के शब्दों तथा वाक्यांशों का प्रचार-प्रसार, कार्मिकों के लिए हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना, ई-मेल द्वारा किये जा रहे पत्राचार में हिंदी को प्रमुखता देना, शीर्ष प्रशासनिक बैठकें हिंदी में आयोजित करना, बैठकों की कार्यसूची एवं कार्यवृत्त हिंदी में तैयार करना आदि शामिल हैं।

कोविड - 19 के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों के कारण हर ओर नवाचार को प्राथमिकता दी जा रही है। डिजिटल और ऑनलाइन माध्यमों को सहजता से अपनाया जा रहा है। सामाजिक दूरी का पालन तथा मास्क का प्रयोग करने को लेकर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए हिंदी पखवाड़ा-2020 के दौरान प्रशासनिक शब्दावली (हिंदी शब्दज्ञान) प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। प्रतियोगिता के ऑनलाइन आयोजन से अधिकारी और कर्मचारी गण ने अपने कर्तव्य स्थल से ही इसमें सहभागिता की। इस दौरान "हिंदी की दशा एवं दिशा" विषय पर ऑनलाइन माध्यम से एक अतिथि व्यख्यान का भी आयोजन किया गया। ऐसे आयोजन डिजिटल भारत को बढ़ावा देने हेतु किए जा रहे हमारे प्रयासों की ही कड़ियाँ है।

कार्यालय में राजभाषा के क्रियान्वयन में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए हमें न केवल विदेश मंत्रालय के पीएसपी प्रभाग तथा हिंदी प्राभाग एवं राजभाषा विभाग (भारत सरकार, गृह मंत्रालय) द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहता है अपितु नराकास (कार्यालय-1), चंडीगढ़ का भी निरंतर साथ मिलता रहता है। समय-समय पर विशिष्ट अतिथियों के व्याख्यानों आदि के माध्यम से भी विभिन्न अनुभागों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए कार्यालय निरंतर प्रयत्नशील रहा है।

कार्मिकों की भारी कमी के बावजूद यह कार्यालय पिछले दो वर्षों से नागरिकों को 07 लाख से अधिक पासपोर्ट एवं संबंधी सेवाएँ प्रदान कर न केवल जनसेवा अपितु अपनी कार्यकुशलता का भी परिचय दे रहा है। कार्यालय में अधिकारियों व कर्मचारियों ने पूर्ण जिम्मेदारी एवं तत्परता के साथ सौंपे गए कार्यों को निष्पादित किया है। यह कार्यालय सदैव ही लिए नागरिकों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए समर्पित रहा है तथा आगे भी जनसाधारण को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध रहेगा।

हिंदी : बढ़ता वैश्विक दायरा, बढ़ते अवसर

अमित कुमार रावत
उप पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़

- विश्व भर में हिंद की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं।
- हिंदी दुनिया भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है।
- भारत के संविधान के (अनुच्छेद 343 (1) के द्वारा हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। हिंदी की लिपि देवनागरी है।
- विदेशों में रहने वाले भारतीयों के बीच भारतीय संस्कृति एवं भाषा सीखने की रुचि बढ़ी है।
- कई विदेशी देशों ने भारतीय अध्ययनों को बढ़ावा देने के लिए अपने यहां हिंदी सीखने के लिए अध्ययन केंद्र स्थापित किए हैं।
- इन संस्थानों में भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति पर पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के साथ-साथ संस्कृत, हिंदी आदि कई भारतीय भाषाओं की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।
- अमेरिका के कुछ स्कूलों ने फ्रेंच, स्पैनिश और जर्मन के साथ एक विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को शुरू करने का फैसला किया है।
- केंद्र सरकार के विभिन्न विभाग, राज्य सरकारों (हिंदी भाषी राज्यों) के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है।
- टीवी और रेडियो चैनलों के साथ-साथ स्थापित पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में नौकरियों के अवसर में बढ़ोत्तरी हुई है।
- पत्रकारिता, रेडियो , टीवी, सिनेमा के क्षेत्र में के क्षेत्र में स्क्रिप्ट लेखक, संवाद लेखक आदि के रूप में उपलब्ध अवसर हैं।
- गीतकार के रूप में रचनात्मक, कलात्मक लेखन की मांग होती है।
- द्विभाषी अथवा बहुभाषी दक्षता रखकर कोई भी अनुवादक के रूप में अपनी आजीविका अर्जित की जा सकती है।
- विदेशों विश्वविद्यालय में हिंदी पठन-पाठन के साथ-साथ विदेशी भाषाओं को पढ़ाकर अपनी आजीविका अर्जित की जा सकती है।

हिन्दी पखवाड़ा-2020 की झलकियाँ

विदेश मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए विशेष कार्य

मोहन लाल मीना, सहायक निदेशक, विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली

विदेश मंत्रालय अपने राजनयिक प्रयासों से भारत के राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हितों तथा प्रवासी भारतीय नागरिकों के कल्याण के लिए कार्य करता है। विदेश मंत्रालय ने वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान एक कोविड-१९ सेल की स्थापना की है। मंत्रालय ने विदेशों में फंसे भारतीय नागरिकों की कुशल वापसी के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय के साथ मिलकर बड़े पैमाने पर 'वंदे भारत मिशन' चलाया है।

मंत्रालय अपने मुख्यालय और अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ-साथ विदेश स्थित भारतीय राजदूतावासों, उच्चायोगों और वाणिज्य राजदूतावासों के माध्यम से विश्व पटल पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। इन महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नानुसार है :-

1. **संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी भाषा को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता**

❖ हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में स्वीकार करने तथा विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विदेश मंत्रालय लगातार प्रयास कर रहा है। विदेश मंत्रालय के निरंतर प्रयासों के फलस्वररूप संयुक्त राष्ट्र संघ की वेबसाइट और सोशल मीडिया माध्यमों में हिंदी की विषय-वस्तु की मात्रा को बढ़ाया गया है जिसकी पहुँच और लोकप्रियता में लगातार वृद्धि हुई है।

❖ इन प्रयासों के अंतर्गत जून, 2018 से संयुक्त राष्ट्र यूएन रेडियो वेबसाइट पर अपना कार्यक्रम हिंदी में भी प्रसारित करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) ने 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य पर 10 जनवरी, 2019 को हिंदी समाचार वेबसाइट का शुभारंभ किया है। पिछले वर्षों में संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निम्नलिखित कार्य शुरू किए हैं:-

(1) यूएन की हिंदी वेबसाइट
(2) यूएन का हिंदी फेसबुक पेज
(3) यूएन का हिंदी ट्विटर अकाउंट
(4) यूएन का हिंदी इंस्टाग्राम पेज
(5) साउंड क्लाउड पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा साप्ताहिक हिंदी समाचार बुलेटिन
(6) यूएन ब्लॉग (हिंदी में)
(7) यूएन समाचार मोबाइल ऐप (Android और iOS) का हिंदी विस्तार

❖ संयुक्त राष्ट्र संघ की तात्कालिक प्रगतियों एवं सूचनाओं को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेट्फार्मों जैसे कि ट्विटर, इंस्टाग्राम एवं फेसबुक पर हिंदी में प्रसारित किया जा रहा है।

❖ इन प्लेटफार्मों के हिंदी फॉलोवर्स लगातार बढ़ रहे हैं।

❖ 02 अक्तूबर, 2020 तक संयुक्त राष्ट्र हिंदी ट्विटर हैंडल के 33,700 फॉलोवर्स हैं तथा संयुक्त राष्ट्र हिंदी इंस्टाग्राम के 13,500

❖ संयुक्त राष्ट्र फेसबुक के वैश्विक पेज पर एक हिंदी पेज जोड़ा गया है जिसकी पहुँच 53,88,271 लोगों तक है।

❖ हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए मॉरिशस में 'विश्व हिंदी सचिवालय' की स्थापना की गई है।

❖ तकनीकी आधार पर हिंदी के अध्ययन को सुगम और प्रभावी बनाने के लिए मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में पाणिनी भाषा प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। भविष्य में अन्य देशों में स्थापित होने वाली भाषा प्रयोगशालाओं के लिए विदेश मंत्रालय एक ऐसा सॉफ्टवेयर प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है जो सभी प्रयोगशालाओं में काम आ सके। इससे खर्च में भी कटौती होगी।

❖ पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने वर्ष 2014, 2016, 2017 और 2018 में संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने चारों भाषण हिंदी में दिए हैं।

v आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 2007 में यूएन के न्यूयार्क (अमरीका) स्थित सभागार में आयोजित किया गया ताकि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप से मान्यता दिलाई जा सके।

2. विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन

❖ विदेश मंत्रालय विश्व पटल पर हिंदी के प्रचार-प्रसार और दुनिया भर के हिंदी विद्वानों को एक मंच प्रदान करने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन करता है।

❖ विदेश मंत्रालय ने अलग-अलग देशों में 11 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए हैं।

❖ 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की अनुशंसाओं पर कार्रवाई की जा रही है।

❖ 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 2021 में प्रस्तावित है।

3. विदेशों में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार

❖ वर्तमान में विदेश में 203 भारतीय राजदूतावास, उच्चायोग और वाणिज्य राजदूतावास कार्यरत हैं। इन भारतीय मिशनों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

❖ वर्ष 2019-20 के दौरान 64 विदेशी और भारतीय हिंदी शिक्षकों को हिंदी सिखाने के लिए मानदेय दिया गया।

❖ विदेश स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से हिंदी सीखाने वाले विद्यालयों को हिंदी शिक्षण सामग्री प्रदान की जाती है।

❖ विदेश स्थित भारतीय मिशनों में भी 'हिंदी दिवस' (14 सितंबर) और 'हिंदी पखवाड़े' का आयोजन किया जाता है जिसमें भारतीय मिशनों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ-साथ प्रवासी भारतीय, हिंदी सीख रहे विदेशी छात्र और विदेशी हिंदी विद्वान भाग लेते हैं।

❖ वर्ष 2019 के दौरान 100 मिशनों में तथा वर्ष 2018 में 86 मिशनों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

४. विश्व हिंदी दिवस' (10 जनवरी) का आयोजन

❖ विदेश मंत्रालय प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन बड़े स्तर पर करता है।

❖ विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेशी हिंदी भाषी राजदूतों, हिंदी के विद्वानों, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी सीख रहे विदेशी छात्रों को आमंत्रित किया जाता है।

❖ विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेश मंत्री और विदेश राज्य मंत्री द्वारा उक्त संस्थानों द्वारा आयोजित हिंदी भाषण प्रतियोगिता के विजेता विदेशी छात्रों को अक्षर वृक्ष और प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया जाता है।

❖ विदेश मंत्रालय के अंतर्गत क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों को भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में बेहतर कार्य-निष्पादन करने वाले तीन कार्यालयों को अक्षर वृक्ष और प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया जाता है। इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 'क' क्षेत्र से भोपाल, 'ख' क्षेत्र से चंडीगढ़ और 'ग' क्षेत्र से बैंगलूरु स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

❖ विदेश मंत्रालय के साथ-साथ विदेश स्थित भारतीय मिशनों में भी विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2019 में 99 और वर्ष 2020 में 113 भारतीय मिशनों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया।

5. अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

v विदेश मंत्रालय भारतीय मिशनों के सहयोग से विभिन्न देशों में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन भी आयोजित करता है।

v विदेश मंत्रालय ने 5-6 जून, 2019 को लिस्बन में तथा 25 जनवरी, 2020 को फिजी में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किए।

6. विश्व में भारतीय अध्ययन पीठें

❖ वर्तमान में विदेश में कुल 65 भारतीय अध्ययन पीठें कार्यरत हैं, जो विभिन्न विषयों में अध्ययन को बढ़ावा देती हैं।

❖ विदेश में 23 हिंदी की पीठें भी कार्यरत हैं। इसके अलावा 05 पीठें संस्कृत की भी कार्यरत हैं।

7. विदेश मंत्रालय और इसके अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी का प्रगामी प्रयोग

❖ विदेश मंत्रालय (मुख्यालय) में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा इस अवसर पर हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2019 के हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 08 नवम्बर, 2019 को पुरस्कार

वितरण समारोह में श्री वी. मुरलीधरन, विदेश राज्यमंत्री के कर कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

- विदेश मंत्रालय में समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।
- विदेश मंत्रालय की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित करने के प्रयास किए जाते हैं।
- इन बैठकों में विदेश मंत्रालय के प्रभागों और अधीनस्थ कार्यालयों तथा विदेश स्थित भारतीय मिशनों में राजभाषा कार्यान्वयन का अनुश्रवण (मॉनीटरिंग) किया जाता है और इनसे प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा भी की जाती है।
- विदेश मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति का गठन किया गया है, फिलहाल पुनर्गठन की प्रक्रिया चल रही है।
- मंत्रालय के 'आरबीबी, आई एवं टी प्रभाग' द्वारा वर्ष 2019-20 के दौरान 11 क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों/अन्य कार्यालयों सहित मंत्रालय के 12 प्रभागों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया है।
- संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 2019 के दौरान 03 क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालयों और अन्य कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। वर्ष 2020 में समिति द्वारा 02 अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया है।
- विदेश मंत्रालय में राजभाषा विभाग के सहयोग से 29 जुलाई, 2020 को स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" पर एक विशेष कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग ने भी भाग लिया था।
- राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा 22 अगस्त से 14 सितंबर, 2020 तक आयोजित 'अखिल भारतीय कंठस्थ अनुवाद प्रतियोगिता' आयोजित की गई। जिसमें समग्र रूप से अनुवाद और जांचकर्ता की दोनों श्रेणियों में विदेश मंत्रालय के श्री आशीष नेगी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी और श्री मोहन लाल मीणा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने क्रमशः चतुर्थ एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। जबकि भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों में विदेश मंत्रालय को दोनों श्रेणियों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- विदेश मंत्रालय में हर वर्ष की भांति वर्ष 2020 में भी हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग ने विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया। सचिव, राजभाषा विभाग ने मंत्रालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।
- मंत्रालय का राजभाषा (आरबीबी, आई एवं टी) प्रभाग संसदीय प्रश्न, संसदीय आश्वासन, संसदीय स्थायी समिति की कार्यसूची और की गई कार्रवाई रिपोर्टों, वार्षिक रिपोर्ट, कैबिनेट नोट, विदेशी सरकारों के साथ सभी संधियों और करारों, अधिसूचनाओं, मंत्री के अभिभाषणों आदि का अनुवाद कार्य करता है।
- हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने और हिंदी में कार्य करने का वातावरण तैयार करने की दृष्टि से कुछ रंगीन और प्रेरणास्पद पोस्टर बनाए गए हैं।
- विभिन्न विद्वानों के हिंदी उद्धरणों के साथ सूक्ति पट्टिका बनाई गई है तथा उन्हें कार्यालय में लगाया गया है ताकि हिंदी का माहौल बनाया जा सके।
- मंत्रालय में उपयोग में लाए जा रहे 103 शब्दों को सरल हिंदी भाषा और अंग्रेजी भाषा के वाक्यों में तैयार किया गया है जिसे मंत्रालय की हिंदी वेबसाइट पर अपलोड किया गया है और राजभाषा विभाग को भी भेजा गया है। इस सूची को मंत्रालय की हिंदी वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

8. हिंदी के साथ- साथ अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना

- पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को सगी बहनों की उपमा दी है।
- हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं संबंधित नीतियों के अनुपालन को सुनिश्चित करने की दृष्टि से विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव [राजभाषा, भारतीय भाषाएं,

भाषांतर और अनुवाद (RBB, I&T)] का एक पद सृजित किया गया है, जिनके मार्गदर्शन में राजभाषा प्रभाग कार्य कर रहा है।

❖ विदेश मंत्रालय जितना काम हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए कर रहा है, उतना ही काम दूसरी भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के लिए भी कर रहा है। इसके लिए मंत्रालय ने निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रम बनाए हैः

(क) समीप:- इस योजना में विदेश मंत्रालय में कार्यरत अधिकारी राजदूतों के सम्मेलन में आने से पहले अपने पूर्व विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय, जहाँ से उन्होंने 10वीं, 12वीं अथवा डिग्री प्राप्त की है, से संपर्क कर विदेश नीति और विदेश सेवा के बारे में संबंधित संस्थान को स्थानीय भाषा में जानकारी प्रदान करते हैं।

(ख) भारत एक परिचय:- इस योजनांतर्गत भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं की पुस्तकें, जिनका चयन संबंधित राज्य की साहित्य अकादमी द्वारा किया जाता है, के 51 पुस्तकों के सेट विदेश स्थित भारतीय मिशनों और केंद्रों को भेजे जाते हैं।

(ग) विदेश आया प्रदेश के द्वार:- इस योजना के अंतर्गत विदेश मंत्रालय का प्रचार-प्रसार प्रभाग मंत्रालय के प्रादेशिक भाषा के अधिकारियों को संबंधित राज्य में लेकर जाते हैं और वहाँ उस प्रदेश की भाषा में सवाल-जबाव का कार्यक्रम किया जाता है।

9. मंत्रालय और इसके अधीनस्थ- कार्यालयों में हिंदी प्रकाशन

❖ मंत्रालय हर साल अपने कार्यकलापों का लेखा-जोखा अपनी 'वार्षिक रिपोर्ट' में प्रकाशित करता है। यह रिपोर्ट हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती है।

❖ मंत्रालय द्वारा एक घरेलू पत्रिका 'भारत संदर्श' (इंडिया पर्सपेक्टिव) डिजिटल रूप में 16 भारतीय भाषाओं में एक साथ प्रकाशित की जाती हैं।

❖ मंत्रालय का पासपोर्ट सेवा प्रोजेक्ट (पीएसपी) प्रभाग हर साल 'पासपोर्ट पत्रिका' प्रकाशित करता है।

❖ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर), नई दिल्ली 'गगनांचल' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका प्रकाशित करता है।

❖ विश्वक हिंदी सचिवालय, मॉरीशस 'विश्व हिंदी पत्रिका' केवल हिंदी में प्रकाशित करता है जिसमें दुनिया भर के हिंदी विद्वानों के शोधपरक हिंदी लेख छपते हैं।

❖ मंत्रालय के अधीनस्थ क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बेंगलुरु 'पासपोर्ट प्रवाह', क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चण्डीगढ़ 'हिंदी गौरव', क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, भोपाल 'क्षितीज' और क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, लखनऊ 'कायाकल्प' नामक घरेलू वार्षिक हिंदी पत्रिका निकालते हैं।

10. संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति द्वारा विदेश मंत्रालय (मुख्यालय) का राजभाषा संबंधी निरीक्षण।

❖ विदेश मंत्रालय (मुख्यालय) का पहला निरीक्षण 14.01.1989 को हुआ, दूसरा 18.11.1991, तीसरा 31.05.2000, चौथा 05.02.2007 को और पाचवाँ निरीक्षण 12.10.2020 को संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति ने विदेश सचिव का दो बार अर्थात 15.10.1993 और 23.09.2002 को मौखिक साक्ष्य लिया है।

पत्रिका हेतु इस महत्वपूर्ण लेख के लिए सहायक निदेशक महोदय का हार्दिक आभार: संपादक

खुश रहने के दस मंत्र

संकलन : कुमारी साधना शुक्ला
वरिष्ठ अधीक्षक

1. आप हैं तो सब कुछ है। इसलिए सबसे पहले खुद से प्यार करना सीखें।
2. अगर आप खुश हैं तो आप दूसरों को भी खुश रखते हैं। इसलिए आपकी खुशियां आप अपनी खुशियों को प्राथमिकता दें।
3. यदि आपको किसी से कुछ कहना है तो कह दीजिए, क्योंकि कह देने से मन हल्का हो जाता है।
4. यदि आप मन की बात कह नहीं सकते तो उसे लिखकर दीजिए। आजकल तो कई सामाजिक माध्यम उपलब्ध हैं। ऐसा करने से आप भी अच्छा महसूस करेंगे।
5. रिश्ते अनमोल होते हैं। इसलिए अपने रिश्तो की कद्र करें और दोस्तों को समय दें। दोस्तों के साथ हम सबसे ज्यादा खुश रहते हैं। इसलिए दोस्तों के साथ समय गुजारें।
6. किसी भी मनमुटाव को मन में रखने से मन भारी हो जाता है और तनाव बढ़ जाता है, अत: इससे दूर रहें।
7. खुश रहने के लिए माफ करना सीखे आपकी उम्र चाहे जो हो अपने भीतर के बच्चों को कभी बड़ा ना होने दें। उसे शरारत करने दें। तभी आप जिंदगी की असली खुशी महसूस कर सकेंगे।
8. आप चाहे कितने भी बिजी क्यों ना हो? अपने शौक के लिए समय जरूर निकालें तभी आप जिंदगी की असली खुशी महसूस कर सकेंगे और आप जिंदगी से हमेशा प्यार करेंगे। आपको बोरियत नहीं महसूस होगी।
9. खुशी पाने से कहीं ज्यादा खुशी देने से मिलती है। इसलिए जीवन में ऐसा काम जरूर करें जिनसे आप दूसरों के चेहरे पर खुशी भी खेल सके।
10. स्वस्थ और फिट रहें क्योंकि बीमार शरीर कभी खुश नहीं रह सकता।

"स्वच्छता पखवाड़ा" का आयोजन

स्वच्छता पखवाड़ा-2020 में शामिल बच्चे, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी एवं उप पासपोर्ट अधिकारियों के साथ

यह घड़ी भी बीत जाएगी

श्री सहदेव कौशिक
वरिष्ठ अधीक्षक

बिखरा हुआ है सन्नाटा
कोरोना का कहर छाया है
खतरनाक यह मेहमान
डर का फरमान लाया है

वुहान में जन्मा
सारी दुनिया में पल रहा
तबाही का दूजा नाम
हर जिंदगी में खल रहा

'अतिथि देवो भव:'
यह भारत का संस्कार है
सैनिटाइजर की बहार में
दोनों हाथ जोड़ सत्कार है

आंखों में है दर्द
फासले हैं हाथों में
चेहरों पर है मायूसी
हिचक है मुलाकातों में

मास्क लगाना है
हाथ को नियमित धोना है
रहना है घर पर ही
हाहाकार है, कोरोना है

ठहर गई है जिंदगी
मानो सांस थमने सी लगी है
कैद हो गए हैं घरों में
याद अपनों की खलने लगी है।

रहते थे जो सड़कों पर
छिप गए हैं अंधकार में
बेरोजगार किये कोरोना ने
हैं वो रोटी के इंतजार में

महामारी की इन घड़ियों में
कई हाथ आगे आए हैं
जान हथेली पर रखकर
कई परिवार बचाए हैं।

देशहित का हूं पुजारी
दुआ-खैरियत करता हूं
डॉक्टर, पुलिस, सफाई कर्मियों को
शत-शत नमन करता हूं

हारी है जो जिंदगी
वह जल्द जीत जाएगी
आई है मुश्किल घड़ी
पर यह घड़ी भी बीत जाएगी।

प्रदूषण कैसे हो कम

राम दास
सहायक अधीक्षक

जैसे-जैसे बढ़ रहा प्रदूषण
घुटने लगा है मानव का दम
धुआँ में लिपटा वातावरण
पानी हुआ मैला
घट रहे हैं प्रतिदिन वन।

भविष्य बचाने के लिए जरुरी समाधान
सबसे पहले सभी को मिले
साफ-सफाई-स्वच्छता का ज्ञान
पेड़ कटे कम, हो वृक्षारोपण
बढ़ेगी हरियाली, स्वच्छ बहेगी पवन।।

कलाकृति: किरन कुमारी

मेरा पन्ना
जीवन क्या है?

विनीत सैन
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

जीवन क्या है?
एक सुहाना सफर है
जहाँ सबके पास उड़ने के लिए पर हैं
उड़ते पंछी की प्यास है
पुराने लम्हों की मिठास है।

यह है उस नदी की तरह
जो निरंतर बहती रहती है।
और बहते-बहते
मिल जाती है सागर से।

यह वह सोच है
जिसकी सीमा नहीं है
ऊंचे पर्वत की चोटी है
गहरे पानी का मोती है।

स्वच्छ भारत

जितेन्द्र
सहायक अधीक्षक

कलाकृति - लावण्या साहू (पुत्री - प्रफुल चंद्र साह)

एक समय था...
जब जीवन था पाषाण
न बसेरा था, न कपड़े, न सफाई का कोई नाम
हो जाता था गुजारा, बर्बर शिकार
जीवन के विकास का था यही आधार

की मेहनत, ली शिक्षा, हुआ एडवांस
सभ्य हुआ मानव, सभ्यता जरूरी काम
मन स्वच्छ हो, तन स्वच्छ हो, सुंदर विचार हो।
स्वच्छ विचारों से युग बदलेगा, मन बदलेगा
और होगा स्वच्छ भारत का निर्माण।

स्वच्छता और हम

रेनू यादव
सहायक अधीक्षक

कार्यालय में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में शामिल बच्चे

महात्मा गांधी का था एक सपना
सुंदर-स्वच्छ हो देश अपना
स्वच्छता एक आवश्यकता नहीं
बल्कि है एक जीवनशैली
स्वस्थ रहें हम, स्वच्छ हो जीवन
स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ वातावरण
यदि ऐसा हो जाए संभव
धरती हो जाए और भी पावन
यही अभियान चलाना है
स्वच्छता को ही सपना बनाना है।

समय

रमेश कुमारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जीवन लौट चला
समय की अपनी चाल है
चले हमेशा आगे की ओर
मानव ने खूब तरक्की पायी
सूती छोड़ पापलीन अपनायी
टेरीकोट और पॉलिथीन भी पायी
जब गुजरा कुछ नागवार
तो फिर दुनिया सूती पर आयी

सादा पेय और सादा खाना
सदा सेहत का है रखवाला
फिर कुछ ऐसा फैशन चला
छोड़ के घर का दाना-खाना
जंक फूड को अपना बनाया
सेहत ने फिर आँख तरेरी
दी धमकी कि तोड़ूँगा नाता
तो डर से देसी खानपान अपनाया

यूं ही दुनिया भागती जाती
भागती जाती धरती छोड़
चाँद-मंगल पर बसने का
नित दिन है सपने संजोती
धीरे-धीरे फिर समझा मानव
शायद सीख परिंदों ने दी
आसमान में चाहे जितना उड़ लो
पाँव टिकाने को जमीन ही सही

फिर
चला जीवन
अपनी रफ्तार से
पर
कभी-कभी सोचूँ मैं
क्या समय बढ़े बस आगे-आगे
या यह भी लौटे

कार्यालय में पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन

बेटी

ममता
सहायक अधीक्षक

जब जन्म है लेती बेटी
ख़ुशियाँ साथ है लाती बेटी
ईश्वर की सौगात है बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बेटी
आंगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण सिखाती बेटी
नए-नए रिश्ते बनाती बेटी
जिस घर जाए, उजाला लाती
बार-बार याद आती है बेटी
बेटी की कमी क्या
उनसे पूछो जिनके पास नहीं है बेटी।

क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना

रोशन सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना
इसे बनाने वाले को
सबसे पहले पड़ा था रोना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

किसी ने अपनी पत्नी खोई
किसी ने खोया भाई
किसी ने खोई अपनी बहना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

भूखे-प्यासे, नंगे पाँव
मीलों पैदल चला कि बच जाए जान
किसी ने अपना बच्चा खोया, बच्चे ने अपना खिलौना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

महामारी ने कड़ियों को मिलाया
कोई आया दूर शहर से, कोई दूर देस से आया
अपने, उनको, सबको सबने मिलकर खिलाया खाना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

कोई बस से घर पहुँचा, सरकार ने चला दी रेल
ताकि संकट की इस घड़ी में परिवार का हो जाए मेल
आफत तो है, पर हो कम परेशान होना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

महामारी में पूरी दुनिया ने
हिंदुस्तान को पुनः धन्यवाद किया
करना सीखा नमस्ते, छोड़ा हाथ मिलाना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

अच्छे-अच्छों ने छोड़ दिया
अपनों को गले लगाना
एक बात जरूरी भैया, सबको है मास्क लगाना
क्यों फैला यह दुष्ट कोरोना!

अब भी चेतो हे इंसान!

भगवती प्रसाद
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

पर्वत शिखरों पर
मानव ने कचरा पहुँचाया
पावन गंगा को
किया विषाक्त

सिमटे हिमनद
कौन उद्धारे
अब कौन भगीरथ
करे प्रयास

हिमालय शिखर तक को
स्पर्श कर चुके
मानव के पैर
आकांक्षाएँ छूती आकाश

अब कौन
हाँ, हाँ अब कौन
जो बहा दे
धरती के सब पाप-ताप

नहीं कोई अब दूसरी गंगा
शंकर जटा-जूट न खोलेंगे
मानव के रोज-रोज का मंथन
कीचड़, कचरा, जल विषाक्त

मनु पुत्र
तू पियेगा क्या
और क्या पियेगी
तेरी संतान

तू किसे पुकारे भस्मासुर
जबकि तेरा ही
झूठा आवरण
झूठा अभिमान

झूठ, कपट से बच-बचा
तीसरा नेत्र मत खुलवा
पावन गंगा को निर्मल कर
तांडव हेतु अब मत बुलवा।।

अभिनंदन है।

जयवीर सिंह भंडारी
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

प्रकाश पर्व के पुण्य दिवस पर
उगते सूरज का अभिनंदन है
असहाय-बेबसों की सेवा में तत्पर
भूले-भटकों के मार्गदर्शकों का
सादर वंदन है, अभिनंदन है।

अशिक्षित को शिक्षित कर
विस्तार ज्ञान का कर्म कर रहे
पीड़ित नारी के रक्षक
और नारी का सम्मान कर रहे का
सादर वंदन है, अभिनंदन है।

संकीर्ण मानसिकता को दूर कर
उजाला जो ला रहे
नेत्रहीनों के पथ-प्रदर्शक, लाठी बन कर
गिरे-पड़े को उठा रहे का
सादर वंदन है, अभिनंदन है।

देश के लिए हंसते-हंसते
मर-मिट गए, सूली चढ़ गए
देश में और सीमा पर रक्षा में
निशदिन प्राण न्यौछावर को तत्पर का
सादर वंदन है, अभिनंदन है।

राष्ट्रहित में दृढ़ संकल्प ले
जो भ्रष्टाचार-कुरीति मिटाये
देश को स्वच्छ बनाये
राष्ट्र को आगे बढ़ाये का
सादर वंदन है, अभिनंदन है।

कोरोना का रोना

सुखदेव
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

कोरोना का है रोना, चारों ओर इसी का नाम
घर-घर चर्चा हो रही, हर सुबह-शाम
क्रूर कोरोना ने मचा दिया कोहराम
राक्षस बन आक्रमण किया बंद हुए सभी काम

कोरोना से परेशान हो गई सारी आवाम
मजबूरी में ढूंढने लगे नए-नए इंतजाम
समय नहीं है, और नहीं चै-आराम
भाग-दौड़ भरी दिनचर्या को दे दिया विराम

कैसा कहर है कोरोना का, बंद हुए व्यापार तमाम
प्रयत्न और सहयोग करो, डॉक्टर को करो रोज प्रणाम
क्या करना है मंगल पर, करोड़ों का है यह काम
यह धरती रोग मुक्त हो, खोजें नया आयाम

सब मिलकर करें प्रार्थना, लें प्रभु का नाम
जल्दी समाप्त हो कोरोना का भयानक परिणाम
हे अभिमानी हारे मानव, प्रकृति को करो सलाम
बैर तजो, हिंसा त्याग, बनो शाकाहारी यही पैगाम।

नारी का शोषण जारी है

रमनदीप कौर
सहायक अधीक्षक

हर रोज-ओर नारी का शोषण
नियमित रूप से जारी है
यह भी इस संसार में
भयानक महामारी है

कुछ तो कर के शोषण
दिखाते है बड़ी हैवानियत
पता नहीं क्या बाकी रहता
छीनकर कपड़े इज्जत

पुलिस और कानून दोनों का
धत्ता बता, माखौल उड़ाये
पीड़िता को सामने खड़ा कर
उसे ही गुनहगार बताये

लगता है बेटियों का जन्म लेना
हो गया जहां में कोई अपराध
शोर तो वैसे बहुत हो रहा,
पर जमीर की ना उठती आवाज

जुबां पर गाली देखो हमेशा
रहता है महिला के नाम
तो सोचो कैसे जहां में रुके
नारी के विरुद्ध अत्याचार

लगता है कि जहां में केवल
नशा बचा उत्पीड़न का
हैवानों का लक्ष्य यही
एकमात्र बचा है जीवन का।

ईश्वर

विनीत जैन
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

किसी ने मूर्तिकार से पूछा--क्या बना रहे हो?

मूर्तिकार बोला। इधर कन्हैया, यह गणेश जी, शिव जी और हनुमान जी और यह दुर्गा मैया और लक्ष्मी मैया।

फिर वह व्यक्ति अट्टाहास करते हुए बोला। जिस परमात्मा ने समस्त सृष्टि का निर्माण किया है, तुम उन्हें बना रहे हो! तुम उन्हें कैसे बना सकते हो, तुम्हारी क्या औकात है?

इस पर वह मूर्तिकार बोला ''सज्जन, मैं मूर्ति बनाकर अपनी औकात नहीं दिखा रहा हूँ।'' मैं तो बस अपने नयनों और हृदय में बसे ईश्वर के रूप को एक मूर्त रूप देने की कोशिश कर रहा हूँ कि वह कितना भव्य, सुंदर, मनमोहक हैं। पता नहीं, फिर भी क्यों मैं उनके रूप को हूबहू नहीं उतार पा रहा हूँ। उनकी भव्यता और सौंदर्य में कोई न कोई कमी रह ही जाती है। इसलिए मैं निरंतर प्रयासरत रहकर कई और मूर्तियों का निर्माण करता रहता हूँ कि शायद इन मूर्तियों की छवि किसी और के हृदय में बसे ईश्वर के रूप में मेल खा जाए।

संगत का असर

प्रफुल चंद्र साह
सहायक अधीक्षक

एक भंवरे की मित्रता एक गोबर में रहने वाले कीड़े से हो गयी। एक दिन कीड़े ने भंवरे से कहा "भाई, तुम अच्छे मित्र हो, इसलिए मैं तुम्हें भोजन पर आमंत्रित करता हूँ। आमंत्रण स्वीकार कर भंवरा उस कीड़े के घर गया। खाने के बाद भंवरा सोचने लगा "मैंने बुरा का संग किया, इसलिए मुझे गोबर खाने वाले के साथ खाना पड़ा।

बाद में भंवरे ने कीड़े को अपने यहाँ भोजन करने का आमंत्रण दिया। जब कीड़ा भंवरे के घर आया तो पर है तो भंवरे ने कीड़े को उठाकर गुलाब के फूल में बिठा दिया। कीड़े ने पराग का रस पीकर मित्र का जैसे ही धन्यवाद करना चाहा कि एक पुजारी ने फूल तोड़कर भगवान के चरणों में रख दिया। कीड़े को भगवान के दर्शन भी हो गया और साथ ही उनके चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शाम को पुजारी ने सभी फूलों को समेटकर गंगा जी में समर्पित कर दिया। कीड़ा अपने भाग्य पर हैरान था।

इतने में भंवरा उड़ता हुआ कीड़े के पास आया और पूछा - मित्र क्या हाल है? कीड़े ने कहा – दोस्त, जन्म-जन्म के पापों से मुक्ति हो गई। यह सब अच्छी संगत का फल है।

संगत से गुण ऊपजे, संगत से गुण जाय
लोहा लगा जहाज में , पानी में उतराय!

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "हिन्दी गौरव" का विमोचन

श्री सत्यदेव नारायण आर्य, माननीय राज्यपाल, हरियाणा ने दिनांक 29.11.2019 को कार्यालय की राजभाषा पत्रिका " हिन्दी गौरव" के तृतीय अंक का विमोचन किया।

एक इस अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि "सरकारी कार्यालयों में हिंदी के सरल शब्दों के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जैसे-जैसे हिंदी का गौरव बढ़ेगा, वैसे-वैसे भारत का भी गौरव बढ़ेगा।" माननीय महोदय ने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित भावी पाठकों को पत्रिका के प्रकाशन हेतु बधाई देते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति इसी तरह समर्पित रहने हेतु अपनी शुभकामनाएँ दीं।

राजभवन, हरियाणा में आयोजित पत्रिका के विमोचन कार्यक्रम में कार्यालय की ओर से श्री शिवास कविराज (क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी), श्री अमित कुमार रावत (उप पासपोर्ट अधिकारी), श्रीमती सुमन नेगी एवं श्री सहदेव कौशीक (दोनों अधीक्षक) वर्तमान में वरिष्ठ अधीक्षक , पत्रिका के संपादक श्री कृष्णा जी पाण्डेय सहित श्रीमती रेनू यादव, श्री प्रफुल चंद्र साह, श्री कैलाश कुमार एवं श्री राजीव खेतरपाल (सभी सहायक अधीक्षक) एवं श्री राकेश सिंह (वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक) उपस्थित थे।

सूचना का अधिकार

संजय कुमार, सहायक अधीक्षक

सूचना का अधिकार कानून 15 जून 2005 को संसद द्वारा पास किया गया तथा 12 अक्तूबर 2005 को पूरी तरह लागू कर दिया गया। सूचना का अधिकार कानून लागू होने के बाद भारत विश्व का 55वां ऐसा देश हो गया है, जहाँ देशवासी कानून के माध्यम से किसी भी विभाग, केन्द्र अथवा सरकार से सूचना प्राप्त हो सकेगी। इस कानून का मूल उदेश्य जनता को सरकार से सूचना पाने का अधिकार प्रदान करना है। सरकारी कामकाज में सुधार तथा पारदर्शिता लाने की दिशा में यह कानून अहम सिद्ध हो रहा है।

परंतु 'सूचना' का अर्थ क्या हैं, सूचना किसे कहते हैं? अधिनियम के अनुसार सूचना की परिभाषा निम्न है:-

'सूचना' से किसी इलेक्ट्रॉनिक रूप में धारित अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, मत, सलाह, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, आदेश, लॉगबुक, संविदा, रिपोर्ट, कागजपत्र, नमूने, मॉडल, आँकड़ों संबंधी सामग्री और किसी प्राइवेट निकाय से संबंधित ऐसी सूचना सहित, जिस तक तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी लोक प्राधिकारी की पहुँच हो सकती है, किसी रूप में कोई सामग्री अभिप्रेत है।

इसके तहत

1. सभी सरकारी संस्थाओ एवं मंत्रालयों में जनसूचना अधिकारी की व्यवस्था का प्रावधान हैं।
1. कोई भी व्यक्ति राजकीय भाषा में पत्राचार के द्वारा केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी से आवेदन कर सकता हैं।
3. सूचना माँगने का निर्धारित शुल्क 10 रूपये हैं. यदि सूचना प्राप्त करने में अधिक लागत लगती हैं, तो इसका भार आवेदनकर्ता पर ही होगा कि वह लागत का भुगतान करे। परंतु गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले बीपीएल कार्ड धारक को सूचना प्राप्ति आवेदन पत्र के लिए किसी तरह का शुल्क देने की जरूरत नही हैं।
4. आरटीआई आवेदन के लिए किसी विशेष प्रपत्र की आवश्यक नही हैं, इसे सादे कागज से भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
5. लोक सूचना अधिकारी तीस दिन के भीतर आवेदन का निपटारा करेंगे; परंतु जहाँ मांगी गई जानकारी का संबंध किसी व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता से है, वहाँ लोक सूचना अधिकारी को अनुरोध प्राप्त होने के अड़तालीस घंटे के भीतर सूचना उपलब्ध कराना होता है।
6. यदि, लोक सूचना अधिकारी विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर सूचना के लिये अनुरोध पर विनिश्चय करने में असफल रहता है तो, लोक सूचना अधिकारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने अनुरोध को मंजूर कर दिया है।

परन्तु लोक सूचना अधिकारी के पास निम्न परिस्थितियों मे सूचना देने की बाध्यता नहीं है:-

(क) सूचना, जिसे प्रकट करने से भारत की प्रभुता और अखण्डता, राज्य की सुरक्षा, रणनीति, वैज्ञानिक या आर्थिक हित, विदेश से संबंध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो या किसी अपराध को करने का उद्दीपन होता हो;

(ख) सूचना, जिसके प्रकाशन को किसी न्यायालय या अधिकरण द्वारा अभिव्यक्त रूप से निषिद्ध किया गया है या जिसके प्रकटन से न्यायालय का अवमान होता है;

(ग) सूचना, जिसके प्रकटन से संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल के विशेषाधिकार का भंग कारित होगा;

(घ) सूचना, जिसमें वाणिज्यिक विश्वास, व्यापार गोपनीयता या बौद्धिक संपदा सम्मिलित है, जिसके प्रकटन से किसी पर व्यक्ति की प्रतियोगी स्थिति को नुकसान होता है, जब तक कि सक्षम प्राधिकारी का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी सूचना के प्रकटन से विस्तृत लोक हित का समर्थन होता है;

(ङ) किसी व्यक्ति को उसकी वैश्वासिक नातेदारी में उपलब्ध सूचना, जब तक कि सक्षम प्राधिकारी का यह समाधान नहीं हो जाता है कि ऐसी सूचना के प्रकटन से विस्तृत लोक हित का समर्थन होता है;

(च) किसी विदेशी सरकार से विश्वास में प्राप्त सूचना;

(छ) सूचना जिसको प्रकट करना किसी व्यक्ति के जीवन या शारीरिक सुरक्षा को खतरे में डालेगा या जो विधि प्रवर्तन या सुरक्षा प्रयोजनों के लिये विश्वास में दी गई किसी सूचना या सहायता के स्रोत की पहचान करेगा;

(ज) सूचना, जिससे अपराधियों के अन्वेषण, पकड़े जाने या अभियोजन की प्रक्रिया में अड़चन पड़ेगी;

(झ) मंत्रिमंडल के कागजपत्र, जिसमें मंत्रपरिषद, सचिवों और अन्य अधिकारियों के विचार-विमर्श के अभिलेख सम्मिलित हैं।

(ञ) सूचना, जो व्यक्तिगत सूचना से संबंधित है,

जिसका प्रकटन किसी लोक क्रियाकलाप या हित से संबंध नहीं रखता है।

कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय (डीओपीटी) के दिनांक 19.06.2011 के परिपत्र के अनुसार अधिनियम के तहत:-

- जन सूचना अधिकारी केवल वही सूचना उपलब्ध करा सकता है जो कि सामग्री (Material) के रूप मे उपलब्ध है।
- जन सूचना अधिकारी न तो किसी सूचना का सर्जन (Create) कर सकता है, न ही किसी सूचना की व्याख्या कर सकता है।
- जन सूचना अधिकारी किसी समस्या को सुलझाने का कार्य नहीं कर सकता।
- वह किसी भी काल्पनिक प्रश्नों का जबाब भी नहीं दे सकता है।

सूचना का अधिकार कानून की अवधारणा निश्चित रूप से उपयोगी है एवं इसका उद्देश्य भी कल्याणपूर्ण है परन्तु वास्तविकता से जुड़ने में इसके सामने कई चुनौतियाँ है। इन चुनौतियों से संबंधित जन सूचना अधिकारी को अक्सर दो-चार होना पड़ता है। कुछेक बार अधिकारी भी इस पशोपेश में रहते हैं कि उन्हें कौन सी सूचना देनी है और कौन सी नहीं। यह समय की जरूरत है कि जतना की जरुरतों को समझने वाले निपुण और गुणवान लोगों को ही लोक सूचना अधिकारी के पद पर नियुक्त किया जाए।

कोविड युग में भारत की आर्थिक स्थिति

राजीव खेतरपाल
सहायक अधीक्षक

भारतवर्ष एक विकासशील व काफी बड़ा देश है। यहाँ की जनसंख्या लगभग 130 करोड़ है। यह क्षेत्रफल की दृष्टि से भी विश्व के कई देशों की तुलना में काफी बड़ा है। भारत भले ही एक विकासशील देश हो परंतु वैश्विक स्तर पर भारत की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत मानी जाती है। अमेरिका जैसे बड़े और समृद्ध देश का व्यापार का काफी बड़ा हिस्सा भारत पर निर्भर है।

2020 साधारण तौर पार विश्व के लिए और विशेष रूप से भारत के लिए कुछ ख़ास नहीं रहा। कोविड-19 नामक महामारी ने पूरे विश्व में फैली हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित किया है। इस महामारी के कारण भारत जैसे विकासशील देश सहित पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर बहुत ही विपरीत और बुरा प्रभाव पड़ा है। कोविड-19 को रोकने के लिए भारत में कई दिनों तक लॉकडाउन रहा। इस दौरान सामान की ख़पत अपेक्षाकृत बहुत कम हुई। बड़े-बड़े कारोबार, फैक्ट्रियां काफी समय तक बंद रही। इससे उत्पादन नहीं हुआ। भारत में कोई ऐसा व्यापारी व काम, रोजगार नहीं जो इससे प्रभावित ना हुआ हो। परिवहन से लेकर उत्पादन व वितरण प्रणाली सभी से प्रभावित हुए हैं। होटल, रेस्तरां, पर्यटन सभी उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुए।

रेल तथा हवाई यात्राएँ भी इससे प्रभावित रहीं। सामान की ख़पत होने के कारण सरकार को मिलने वाला कर काफी कम रहा। क्योंकि जब उपभोक्ता उपभोग नहीं करेगा तो आय कहाँ से होगी। अब लॉकडाउन में थोड़ी ढील मिल रही है। भारत सरकार ने लगभग 20 लाख करोड़ के राहत पैकेज की घोषणा की है, जिससे स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। पर इससे उभरने में अभी काफी समय लग जाएगा। हम सभी को कोविड-19 का प्रसार रोकने के लिए सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों और सुरक्षा उपायों, नियमों का पालन करना चाहिए जिससे स्थिति जल्द ही सामान्य हो सके।

श्री चंद्रसेन शर्मा, सहायक पासपोर्ट अधिकारीअपनी सेवानिवृति के अवसर पर

पासपोर्ट सेवा दिवस – 24 जून, 2020

विदेश मंत्रालय ने 24 जून, 1967 को पासपोर्ट अधिनियमन के उपलक्ष्य में 24 जून, 2020 को पासपोर्ट सेवा दिवस मनाया। मंत्रालय द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर और माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री वी. मुरलीधरन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पासपोर्ट अधिकारियों को संबोधित किया।

अपने मुख्य भाषण में, विदेश मंत्री ने कहा कि मौजूदा सरकार के पिछले छह वर्षों के दौरान पासपोर्ट वितरण प्रणाली में पूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ था। 2019 के दौरान भारत और विदेशों में पासपोर्ट जारी करने वाले प्राधिकरणों (पीआईए) ने 1.22 करोड़ से अधिक पासपोर्ट जारी किए थे। देश में कुल 517 पासपोर्ट केंद्र काम कर रहे हैं, जिसमें 93 पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीएसके) और 424 डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) शामिल हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि विदेश मंत्रालय देश में अधिक डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) खोलकर पासपोर्ट सेवाओं को लोगों के करीब ले जाने के प्रयासों को आगे बढ़ाने की ओर और भी ध्यान देगा। वैश्विक आउटरीच अभ्यास के एक भाग के रूप में, विदेश मंत्रालय ने विदेशों में 70 मिशनों और पोस्टों के पासपोर्ट जारी करने की प्रणाली को एकीकृत किया है, जो विदेशों में 95 प्रतिशत से अधिक पासपोर्ट जारी करते हैं। उन्होंने दोहराया कि पासपोर्ट बनाने के नियमों और प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए प्रयास जारी रखने चाहिए। इसके अलावा, आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग का लाभ उठाने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। एम-पासपोर्ट पुलिस और एम-पासपोर्ट सेवा ऐप्स ने प्रणाली को सुधारा है और ग्राहकों की संतुष्टि बढ़ाई है। ई-पासपोर्ट का उत्पादन इस संबंध में एक और महत्वपूर्ण कदम होगा।

अपने संबोधन में, माननीय विदेश राज्य मंत्री ने हमारे नागरिकों के लाभ के लिए पारदर्शी और कुशल पासपोर्ट वितरण प्रणाली सुनिश्चित करने के लिए भारत और विदेशों में काम करते सभी पीआईए के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि एक सुदृढ़ शिकायत निवारण तंत्र, जिसे सीपीजीआरएएमएस में अपनी दक्षता के लिए पहचाना गया था, ने हमारी सेवाओं के वितरण को और अधिक सुधारा है।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले पासपोर्ट कार्यालयों और सेवा प्रदाता के कर्मियों के लिए पासपोर्ट सेवा पुरस्कार घोषित किए गए। चूंकि पुलिस सत्यापन, पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है, इसलिए पुलिस की ओर से जल्द से जल्द मंजूरी प्रदान करने में उनके प्रयासों के लिए पुलिस विभागों का विशेष उल्लेख किया गया।

श्री शिवास कविराज, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, चंडीगढ़ ने इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

क्या आप जानते हैं ???

पासपोर्ट धारकों को पासपोर्ट की समाप्ति तिथि से पहले भेजा जाएगा संदेश

1. विदेश मंत्रालय ने हाल ही में एक नई सेवा की शुरुआत की है जिसमें पासपोर्ट धारकों को उनके पासपोर्ट की समाप्ति तिथि से 09 और 07 महीने पहले दो 'स्मरण संदेश' भेजा जाएगा।

प्रायः यह देखने में आया है कि पासपोर्ट धारक अपने पासपोर्ट का समय से नवीनीकरण नहीं करा पाते हैं और पासपोर्ट की वैध तिथि समाप्त होने तक का इंतजार करते हैं। लेकिन अचानक विदेश की यात्रा करनी हो तो वैध पासपोर्ट होने के बाद भी विदेश की यात्रा करने से वंचित रह जाते हैं क्योंकि उनके उनके पासपोर्ट की वैध तिथि समाप्त 06 माह से कम होती है। क्योंकि अधिकतर देशों द्वारा वीजा देने की शर्तों में एक यह भी है कि "यदि किसी पासपोर्ट धारक के पासपोर्ट की समाप्ति तिथि 06 माह से कम हो तो वह विदेश की यात्रा नहीं कर सकते।"

2. पासपोर्ट एवं पासपोर्ट संबंधी सेवाओं, पासपोर्ट धारक अपने पासपोर्ट के नवीनीकरण के लिए **www.passportindia.gov.in** पर जाकर अथवा mPassport Seva [Consular, Passport and Visa (CPV) Division] मोबाइल ऐप पर आवेदन कर सकते हैं।

प्रदूषण : एक व्यापक समस्या

रमेश चंद्र
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जीवन प्रकृति का दिया उपहार है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं, सभी पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। जैसे-हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, जंगल, पहाड़। पर्यावरण हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंतु मानव अपने हित और स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बेतरतीब तथा अंधाधुन दोहन करता आ रहा है।

आधुनिकीकरण की चाह में हम पर्यावरण को कितना नुकसान पहुंचा रहे हैं इसका अंदाजा हमें कतई नहीं है। और इसी चाह में हम अपने पर्यावरण को जाने-अनजाने में प्रदूषित करते जा रहे हैं। प्रदूषण न केवल हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न आयामों को वरन्यह कई बीमारियों को जन्म देकर हमारे जीवन को भी बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। इन बीमारियों की मार मानव जीवन भर झेलता रहता है।

हमने शहरीकरण और औद्योगिकरण को बढ़ावा तो दिया परंतु साथ ही साथ प्रकृति को कंक्रीट की इमारतों तथा सड़कों में भी बदला है। बढ़ती जनसंख्या के कारण हमारी माँगें बढ़ती जा रही हैं और प्रकृति के अमूल्य उपहार कम पड़ते जा रहे हैं।

परंतु, बड़ा सवाल यह है कि क्या इस समस्या का समाधान किसी एक व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। उत्तर है – नहीं। प्रत्येक आम नागरिक, स्वयंसेवी, सिविल सोसायटी, गैर सरकारी संगठन आदि को व्यक्तिगत स्तर पर और साथ ही साथ सरकार द्वारा आयोजित-प्रायोजित पर्यावरण मुहिमों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। हमें विश्व पर्यावरण दिवस की भूमि के महत्व को समझते हुए एक-दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ना पड़ेगा। समाधान है, पर यह प्रत्येक नागरिक के निरंतर प्रयास से ही मिलना संभव है।

रक्तदान : महादान

गगनदीप नारंग
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

रक्तदान अर्थात रक्त का दान। स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 1997 में विश्व रक्तदान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। तब से 14 जून को प्रतिवर्ष 'विश्व रक्तदान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इसकी शुरुआत का मुख्य उद्देश्य विश्व भर में रक्तदान की महता को समझाना था।

हालांकि गणतंत्र की जननी और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में इस मुहिम को उतना प्रोत्साहन नहीं मिल पाया जितना कि अपेक्षित है। इसके पीछे कई भ्रांतियाँ जिम्मेदार हैं। इन भ्रांतियों में 'रक्तदान से शरीर कमजोर हो जाता है और उस रक्त की भरपाई होने में काफी समय लग जाता है।' प्रमुख है। कई लोगों में यह गलतफहमी भी व्याप्त है कि 'नियमित खून देने से लोगों की रोग प्रतिरोधी प्रति कार्य क्षमता कम हो जाने के कारण बीमारियां जल्दी जकड़ लेती हैं।' ऐसी मानसिकता के चलते लोगों के लिए हुआ बन गया है जिसका नाम सुनकर के लोग सिहर उठते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन भ्रांतियों को दूर करने और रक्तदान के महत्व को समझाने के उद्देश्य से इस आयोजन की नींव रखी ताकि लोग रक्तदान कर जरूरतमंदों की सहायता करें।

एक बार में जो रक्त दिया जाता है उसकी पूर्ति शरीर में 24 घंटे के अंदर हो जाती है।

हमारे रक्त की संरचना ऐसी है कि उसमें समाहित लाल रक्त कोशिका तीन माह में स्वयं ही मर जाते हैं। लिहाजा प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति तीन माह में एक बार रक्तदान कर सकता है। जो व्यक्ति नियमित रक्तदान करते हैं। उन्हें हृदय संबंधित बीमारियां कम परेशान करती हैं।

रक्तदान के प्रति जागरूकता लाने के लिए सरकार द्वारा कई स्तरों पर प्रयास किये जा रहे हैं। कई स्वयंसेवी संगठन भी अपने-अपने स्तर पर इस नेक कार्य में लगे हुए हैं। परंतु इन प्रयासों को और तेज करना समय की मांग है। समाजिक माध्यमों, वेबसाइटों आदि के माध्यम से और व्यक्तिगत प्रयासों से आकस्मिक रक्त की आवश्यकताओं को पूरा किया जा रहा है परंतु भारत जैसे विशाल देश में ये प्रयास ऊंट के मुँह में जीरा समान हैं।

हमारे यहाँ और भी अधिकृत रक्त बैंक की स्थापना हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने की जरूरत है। एक एकीकृत कमांड केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए जिसके माध्यम से पूरे देश में कहीं पर भी खून की जरूरत को पूरा किया जा सके। हम सभी को भी समय-समय पर रक्तदान अवश्य करना चाहिए।

सफलता का सूत्र

कंचन शर्मा
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

आगे बढ़ने के लिए लोग अपने तरीके से मेहनत करते हैं, पर यह जरूरी नहीं कि सभी को सफलता मिल ही जाए। सिर्फ वही लोग अपनी मंजिल पाते हैं जिनमें कुछ करने का ढंग निराला होता है। सफलता के लिए हमें अपने आलस्य को त्यागना होता है। हम जो भी काम करने का सोचें, उसे पूरे दिल से करें। ताकि वह बेहतरीन हो सके। शिखर तक पहुंचने के लिए हमारे अंदर एक जुनून होना जरूरी है।

किसी भी महिला अथवा पुरुष ने अपने जीवन में कोई मुकाम पाया है तो उन्हें विश्वास रहा होगा कि वह कुछ कर सकते हैं। यह विश्वास ही मनुष्य की सफलता की ओर ले जाती है। अतः हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए न कि अनावश्यक बातों-कार्यों में अपना समय व्यर्थ। हमें अपने कर्म से अपनी कमियों को दूर कर कुछ नया सीखने का प्रयास करते रहना चहिए।

जीवन में परेशानियाँ आना इसका हिस्सा है। हमें इससे डटकर मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए और इससे निपटने के कोई आवश्यक उपाय करने चाहिए। हमें कभी भी हताश नहीं होना चाहिए और विश्वास कर आगे बढ़ना चाहिए।

करें योग, रहें निरोग

राकेश कुमार
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

'स्वास्थ्य ही धन है' तथा 'पहला सुख निरोगी काया' जैसी सदियों के अनुभव से उपजी कहावतें अच्छे स्वास्थ्य को रेखांकित करती हैं। आज विज्ञान व तकनीक का युग है। बढ़ती भौतिक सुख-सुविधाओं व आरामपरस्त जीवनशैली अपने साथ स्वास्थ्य संबंधी कई दिक्कतें भी लेकर आई हैं।

योग का नियमित अभ्यास व संतुलित, सुपाच्य आहार और स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर हम इन रोगों से अपना बचाव कर सकते हैं। योग मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ एकाग्रता के लिए आवश्यक है। योग का नियमित अभ्यास शरीर में लोच और इंद्रियों की कार्यकुशलता बढ़ाकर चेहरे पर कांति लाता है। तभी तो कहते हैं "कर्मसु कौशलम्"।

भाषा और संस्कृति से खिलवाड़ करने वाले राजनीतिज्ञ आते हैं, चले जाते हैं। ये राजनीतिज्ञ आज हैं और कल नहीं रहेंगे; किन्तु भारतीय संस्कृति की प्रतीक हिंदी सदा अमर रहेगी।
- पुरुषोत्तमदास टण्डन

कोरोना काल में मानव जीवन

रूपलाल
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जब से मानव जीवन पर कोरोना का आक्रमण हुआ है तब से संसार में चैन नहीं है। कोरोना के प्रकोप से कई ज़िंदगियाँ समाप्त हो गई हैं। अब यह पूछने-जानने का समय नहीं है कि आख़िर यह बीमारी कहाँ से आई, यह प्राकृतिक आपदा है या मानव द्वारा ही बनाया गया कोई ख़तरनाक वायरस? सच तो यह है कि इसके संक्रमण के प्रभाव से पूरे परिवार के लोग ही एक दूसरे से अलग-थलग हो गए हैं।

कुछ समय पहले के समाचारों पर गौर करें तो हम पायेंगे कि किसी एक परिवार में कोई भी सदस्य कोरोना संक्रमित हो जाता है तो पूरा परिवार परेशान हो जाता है। सच तो यह है कि जब पूरी दुनिया कोविड-१९ नामक ख़तरनाक वायरस से लड़ रही है तो संक्रमित व्यक्ति की मनोदशा कैसी हो जाती होगी। यह समय की माँग है कि एकजुट रहें, दूर से ही सही एक-दूसरे का कुशल-क्षेम लेते रहें। एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते रहें।

इन सब बातों के साथ-साथ हमें सरकार द्वारा कोरोनावायरस के बचाव हेतु दिए गए दिशा निर्देश का पालन करना चाहिए। क्योंकि अभी तक इस बीमारी न तो कोई दवाई बन पाई है और न ही कोई टीका।

अपना बचाव, अपने हाथ; नमस्ते करें, ना मिलाएँ हाथ।।

कोविड के समय एक बच्चा

कार्यालय द्वारा आयोजित आनलाइन गोष्ठी में शामिल अतिथि व कार्मिकगण

भारत के गाँव, गाँवों में भारत

स्वरूप चंद मेहता
सहायक अधीक्षक

भारत गांवों का देश है। भारत की अधिकतम जनता इन्हीं गांवों में निवास करती है। महात्मा गांधी कहते थे कि वास्तविक भारत-दर्शन गांवों में ही संभव है जहाँ भारत की आत्मा बसी हुई है।

वही गाँव, जहाँ प्रकृति का सौंदर्य बिखरा पड़ा है। हरे-भरे खेत, कल-कल करती नदियां, बच्चों की खिलखिलाहट, दिन-रात एक करते हुए किसान।

हाल के वर्षों तक गांव में कुटीर उद्योग फलते-फूलते थे। भारत के गांव उन्नत और समृद्धि किसान कृषि पर गर्व अनुभव करते थे। किंतु बीतते समय के साथ नगरीकरण बढ़ता गया, नगरों का विकास होता गया और गांव बिछड़ते-पिछड़ते गए। कई गाँवों की दशा-दिशा दयनीय है। गांव वासी नगरों की चकाचौंध से प्रभावित हैं। युवा अब गांव में नहीं रहना चाहता। वह शिक्षा नौकरी और सुख सुविधा के लिए शहर जा रहा है।

इसके कई कारणों में अशिक्षा, रुढ़िवादी और पुरानी विचारधारा प्रमुख हैं। अन्य कारणों में किसान की प्रकृति पर निर्भरता और हमेशा सूखा और बाढ़ की चपेट में आकर नुकसान उठाना भी कारक हैं। जनसंख्या में निरंतर विकास से खेत भी बँटकर छोटे-छोटे रह गए हैं। अतः चकबंदी नहीं हो पाती और किसान कृषि के आधुनिक साधन का समुचित प्रयोग नहीं कर पाते।

हालांकि सरकार गांवों के विकास के लिए कई जनोन्मुखी योजनाएँ चला रही है। गांव में बिजली पानी, शिक्षा और इलाज की समुचित सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। बैंक आदि भी गांव की तरक्की में अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं। परंतु गाँव, महात्मा गाँधी के सपनों का गाँव अपनों का गाँव कब तक बन पाते हैं, यह तो देखने वाली बात होगी।

कोरोना से क्या सीखें?

स्वरूप चंद मेहता
सहायक अधीक्षक

कोरोना महामारी ने जब से पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लिया है तब से सभी ओर भय, चिंता और अस्थिरता का माहौल व्याप्त है। दुनिया के बड़े से बड़े देश की भी इस बीमारी के सामने एक नहीं चल पाई है। अभी यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि इस बीमारी से कब और कैसे मुक्ति मिलेगी। पिछले कुछ सदियों से किसी संक्रामक रोग से मनुष्य शायद इतना आतंकित नहीं हुआ।

मगर साथ ही एक विमर्श यह भी चल रहा है कि क्या इस महामारी के पीछे मानव की अज्ञानता और प्रकृति के साथ उसके द्वारा किये गए अन्याय के नतीजे हम भुगत रहे हैं?

यह बात सभी को ज्ञात है कि मनुष्य ने पिछले कुछ दशकों में अपने लोभ और प्रकृति के ऊपर अपने अहंकार को साबित करने के लिए पर्यावरण का कितना नुकसान किया है। धरती के हर हिस्से में पशुओं पर क्रूरता के कई उदाहरण मिल जायेंगे।

कोरोना वायरस के लिए हम चीन को भले ही जिम्मेदार बता दें परंतु सवाल यह है कि क्या इस महामारी से हम कुछ सबक लेंगे?

कहा जाता है कि हर आपदा हमें कुछ सिखा कर जाती है। तो क्या कोविड-१९ से भी हमें बहुत कुछ सीखने की जरुरत है? यदि मुझसे पूछा जाए तो मैं कहूंगा - हाँ। हमें प्रकृति के साथ अपने रिश्तों को न केवल बेहतर करना है बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच दोस्ती के संबंधों को फिर से पुनर्जीवित करने की जरुरत है।

ऑनलाइन कक्षाओं को रोचक बनाएं

वीना
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

कोविड-१९ महामारी ने बड़े बच्चों को घरों में कैद रहने के लिए मजबूर कर दिया है। यह बात अलग है कि बच्चों ने ऐसे मुश्किल समय में भी अपनी रचनात्मकता को कम नहीं होने दिया है और अपनी सकारात्मक्ता से यह साबित करने में जुटे हैं कि उनकी दुनिया न थमने वाली, न रुकने वाली है।

म देख रहे हैं कि आजकल ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं। हालाँकि ऑनलाइन कक्षाएँ लाइव कक्षाओं का विकल्प नहीं बन सकती। लेकिन बच्चों में अपरिचित कल्पना शक्ति होती है। वे हर दिन हर समस्या का समाधान खोजने की कोशिश करते हैं। आशय स्पष्ट है कि ई-लर्निंग क्लास में जब बोरियत होने लगे तो विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों से बात करके उसे रोचक और रुचिपूर्ण बनाने में जुट जाना चाहिए।

आने वाले समय न जाने और कितनी चुनौतियों से भरा होगा। हाल ही में एक विद्यालय की कक्षा-9 के कुछ विद्यार्थियों ने एक ऐसा ही रोचक प्रयोग किया है। इन बच्चों ने हिंदी की पुस्तक के लेखक सुदर्शन के एक पाठ 'बात अठन्नी की' का उदाहरण लिया। कक्षाएँ समाप्त होते ही विद्यार्थी केशव ने अपने साथियों के साथ बातचीत कर प्रस्ताव रखा कि क्यों नहीं इस कहानी पर हम ऑनलाइन एक नाटक तैयार करें। आपस में बातचीत करने के बाद उन्होंने अपने शिक्षक से इस हेतु अनुमति ली। नाटक के लिए उचित पात्रों का चयन किया।

निदेव ने बताया सानिध्य ने बताया कि पिछले दिनों ही अखबार में किसी अधिकारी को रिश्वत लेते पकड़े जाने की खबर पढ़ने के बाद उसके मन में विचार आया कि हमारा पाठ भी लगभग ऐसा ही है। क्यों न हम इसे नाटक के माध्यम से अपने विद्यालय के लिए तैयार करें। बस फिर क्या था, इन विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी भूमिका तय की।

कहानी में मुख्य रुप से चार पात्र हैं, जिसे मधु, आनंद, देवराज और जसबीर ने अपनी भूमिका से जीवित किया है। पहला पात्र एक रिश्वतखोर अभियंता है, दूसरा अभियंता का नौकर, तीसरा सरपंच और चौथा सरपंच का चौकीदार। अभियंता और सरपंच दोनों ही भ्रष्ट हैं और यह बात नौकर और चौकीदार दोनों को मालूम है। अभियंता का नौकर बहुत गरीब है; और तो और अभियंता उसे कई-कई महीनों तक पगार भी नहीं देता। इससे उसकी घरवाली काफी परेशान रहती है।

एक दिन अभियंता ने अपने नौकर को ₹5/- का सामान लेने भेजा। आर्थिक परेशानी के कारण नौकर ने अठन्नी का सामान कम कर लिया। शातिर अभियंता ने तुरंत कम सामान पकड़ लिया। उसने अपने नौकर की शिकायत थाने में कर दी। पुलिस वाले नौकर को गिरफ्तार करने ही वाले थे कि मामला सरपंच के संज्ञान में आया। उस गांव में यह पहला मामला था। गांव की बात थी और सरपंच की इज्जत का सवाल था। अत: तय हुआ कि मामले को पंचायत में सुलझाया जाएगा।

पंचायत बैठी। पूछताछ में पता चला कि अभियंता के नौकर ने अठन्नी बचाकर सरपंच के चौकीदार को दे दी थी ताकि वह उसके बच्चों के लिए सामान पहुंचा सके। पंचायत में दोनों उपस्थित हुए। अभियंता के नौकर ने तुरंत अठन्नी चोरी की बात पर स्वीकार ली। सरपंच के चौकीदार ने केवल इतना ही कहा है कि यह रकम उससे काफी छोटी थी जिसे कल रात सरपंच साहब को लिफाफे में बंद करके एक आदमी दे गया था।

बेचारे पंचों की एक ना चली और सरपंच ने फैसला दिया कि अभियंता का नौकर अपने मालिक को ₹१०/- रुपये वापस करेगा। फैसले के बाद अभियंता ने अपने नौकर को और सरपंच ने अपने चौकीदार को नौकरी से हटा दिया।

चारों विद्यार्थियों ने ऑनलाइन नाटक तैयार कर बड़ी शानदार प्रस्तुति दी। उनकी प्रस्तुति की स्कूल प्रशासन के साथ-साथ औरों भी भूरि-भूरि सराहना की। कोरोना ने भले ही हमारे बच्चे को घरों में रहने को विवश कर दिया है, परंतु बच्चों की दुनिया थमने वाली नहीं है। आवश्यकता है हम सब मिलकर ऑनलाइन पढ़ाई के इस नए विधान को सीखने-सिखाने में बच्चों की मदद करें और ई-लर्निंग को वरदान बनाएँ।

कोरोना : एक वैश्विक महामारी

कैलाश कुमार
सहायक अधीक्षक

वायरस अकोशिकीय अति सूक्ष्म जीव होते हैं जो केवल जीवित कोशिका में ही वंश वृद्धि कर सकते हैं। वायरस अम्ल और प्रोटीन से मिलकर बनते हैं। वायरस शरीर के बाहर मृत समान होते हैं परंतु शरीर के अंदर प्रवेश पाते ही जीवित हो जाते हैं। यह अतिसूक्ष्म होते हैं जिस कारण इन्हें सामान्य आंखों से नहीं देखा जा सकता और इन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है।

कोविड-19 भी एक वायरस जनित रोग है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर इसका नाम कोविड-19 (COVID-19) रखा है। जहां CO का अर्थ है Corona, VI का अर्थ Virus 'D' अर्थ है 'Disease' और 19 का संबंध 2019 से है, अर्थात जिस वर्ष इस बीमारी की शुरुआत हुई। यह वायरस सबसे पहले चीन के वुहान प्रांत में पाया गया जो धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल चुका है। कोरोना नामक घातक वायरस का संक्रमण विश्व भर में तेजी से फैल रहा है। इसके लक्षण फ्लू से मिलते जुलते हैं।

लक्षण

- बुखार
- सर्दी और सूखी खांसी
- गले में खराश
- थकान
- सांस लेने में दिक्कत

हालाँकि इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। बच्चे-बुजुर्ग या वे लोग जिन्हें पहले से अस्थमा, मधुमेह या हृदय संबंधी बीमारियाँ हैं उन्हें गंभीर खतरा हो सकता है। अत: उन्हें विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। इसकी अब तक कोई दवा नहीं बनी है। इसलिए इसकी घातकता और बढ़ जाती है।

बचाव : इसके मामले प्रतिदिन पूरी दुनिया में बढ़ते जा रहे हैं। कुछ उपायों को अपनाकर हम इससे बच सकते हैं।

- अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर करें।
- मास्क का प्रयोग करें।
- नियमित अंतराल पर अपने हाथ साबुन से धोएं।
- अपने आँख और मुंह को बार-बार ना छुएं।
- दो गज (छह फीट) की दूरी बना कर रखें।
- अनावश्यक रूप से बाहर न घूमें अथवा यात्रा से बचें।
- सार्वजनिक जगहों पर कम से कम जाएं।
- हाथ मिलाने से बचें।

संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली, ब्राजील आदि देशों ने इस वायरस की बुरी तरह मार झेली है। इस विरुस ने दुनिया की अर्थव्यवस्था को हिला दिया है और भारत भी इससे अछूता नहीं है। यह सही समय है कि सतर्क रहें, स्वस्थ रहें और सरकार द्वारा जारी जारी दिशा-निर्देशों का पालन करना सुनिश्चित करें। पहले भी महामारी पर विजय हासिल की है और इस तरह कोरोना वायरस साथ मिलकर हरायेंगे।

उलझन

सोनम तोमर
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

यह रात क्यों होती है, बरसात क्यों होती है? रात में तारे क्यों दिखाई देते हैं, यह हमसे इतनी दूर क्यों है? यह चाँद-सूरज क्यों निकलते हैं? फिर फूल गुलाबी क्यों? तितलियों में रंग कौन भरता है? हवा दिखाई क्यों नहीं देती? यह झील, झरने, समंदर, पशु-पक्षी पेड़-पौधे, मनुष्य और भी ना जाने क्या-क्या, इन्हें किसने बनाया? मेरा मन अक्सर इन्हीं उलझनों में पड़ा रहता है।

यदि मैं आपसे पूछूँ तो शायद आप कहेंगे कि यह सब ईश्वर ने बनाया। लेकिन, क्या सच में आपको पता है? क्योंकि मैंने ईश्वर को नहीं देखा है। क्या ईश्वर ने कभी आपसे कहा है कि यह सब मैंने बनाया है, आखिर वह दिखते कैसे हैं? अगर ये सारे सवाल आपसे करूं तो आप भी मेरी तरह उलझन में पड़ जाओगे।

बस मैं आप सभी से एक बात कहना चाहूंगी कि अगर जिंदगी सही ढंग से जीनी है तो प्रकृति के साथ जीना सीख लीजिए। ईश्वर यहीं विद्यमान हैं प्रकृति के कण-कण में। आप बातें करना सिखिये, फिर देखिये आपकी दुनिया कैसे बदलती है।

कोरोना : समुचित बचाव ही वर्तमान में इलाज

कर्मवीर सिंह
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जैसा कि हम जानते हैं कि कोरोना एक प्राणघातक रोग है। वर्तमान में इससे बचाव ही एकमात्र इसकी दवा है।

विश्व स्वास्थ संगठन ने इसे महामारी घोषित किया है। यह चीन के वुहान शहर से शुरु होकर पूरे विश्व में फैल गया है और इतना विकराल हो गया कि भारत जैसे विशाल देश में पूरी तरह बंद करना पड़ा। इसका संक्रमण बहुत तेजी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसकी शुरुआत बुखार और खाँसी से होती है। जो आगे चलकर एक विकराल रुप ले लेती है और रोगी के श्वसन तंत्र को बुरी तरह प्रभावित करती है।

इस वायरस से निपटने के लिए वर्तमान में कोई दवाई नहीं है। लेकिन इससे बचने के कुछ उपाय हैं। उन उपायों को अपनाकर हम स्वयं को तथा अपने आसपास के लोगों को इस संक्रमण से बचाने का प्रयास कर सकते हैं।

- अपने हाथ को अच्छी तरह से साबुन से धोएं।
- खांसते या छींकते समय हमेशा मुंह पर रुमाल या डिस्पोजेबल टीश्यू का प्रयोग करें।
- एक-दूसरे से दो गज की दूरी बना कर रखें।
- मास्क का प्रयोग करें।

कोरोना वायरस से बचने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शोधकर्ता वैज्ञानिक इससे छुटकारा पाने के लिए दवा बनाने में जुटे हुए हैं। सरकार द्वारा लगातार इस खतरनाक बीमारी से बचने के लिए कठोर कदम उठाए जा रहे हैं ताकि इस महामारी से जल्द से जल्द निजात पाई सके। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम तो नियमों को कड़ाई से पालन करें ताकि हमारा देश रोगमुक्त हो सके।

प्राणायाम : श्वास की कला

जब इंसान भटकता है, मन अस्थिर है
लेकिन जब सांस स्थिर है, तो मन भी शांत है। : हठयोग प्रदीपिका

अमृता शर्मा
सहायक अधीक्षक

प्राणायाम शरीर में जीवनशक्ति ऊर्जा का विस्तार है, जिसके अभ्यास से मनुष्य स्वस्थ रह सकता है। प्राणायाम योग का श्वास अभ्यास और हमारी जीवनशक्ति का अनुशासन है। यह हमारी शारीरिक और ऊर्जावान प्रणाली की भीतरी रुकावटों और बीमारियों को दूर करने, दर्द और तंत्रिका तंत्र को विनियमित करने में मदद करने के लिए रीढ़ को प्रज्वलित करता है ताकि हम चेतना और जागरूकता प्राप्त कर सकें। प्राण को समझना और नियंत्रित करना शरीर के संतुलन की कुंजी है।

प्राण : प्राण एक सूक्ष्म ऊर्जा या प्राणशक्ति है जो पदार्थ और आत्मा को जोड़ता है। यह एक सूक्ष्म बल है जो भोजन, हवा, पानी, सूरज की रोशनी, वायुमंडल और सभी प्रकार के द्रव्य में उपस्थित हैं।

आयाम : आयाम का अर्थ विस्तार, खिंचाव अथवा विनियमित करना है।

कुछ प्रमुख प्राणायाम तकनीक :

1. नाड़ी शोधन प्राणायाम/अनुलोम-विलोम
2. भस्त्रिका प्राणायाम
3. उज्जयी प्राणायाम
4. सूर्य भेदन प्राणायाम
5. शीतकारी प्राणायाम
6. शीतली प्राणायाम
7. भ्रामरी प्राणायाम
8. मूर्छा प्राणायाम
9. कपालभाती प्राणायाम

प्राणायाम के लाभ : प्राणायाम तनाव को कम करने में हमारी सहायता करता है। प्राणायाम के नियमित अभ्यास से मन शांत रहता है। यह हमारी एकाग्रता, स्मरण शक्ति और ध्यान को बढ़ाता है।

हैकिंग

विभूति डोगरा
आई.टी. अभियंता (टी.सी.एस.)

हैकिंग वे गतिविधियाँ होती हैं जो कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट और यहाँ तक कि पूरे नेटवर्क जैसे डिजिटल उपकरणों से समझौता करना चाहती हैं। हाँ, हैकिंग हमेशा दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए ही नहीं होती। हैकिंग और हैकरों के अधिकांश संदर्भ आजकल साइबर अपराधियों द्वारा इसे गैरकानूनी गतिविधि के रुप में वित्तीय लाभ, विरोध, सूचना एकत्र करने (जासूसी) और यहाँ तक कि केवल मौज-मस्ती के रुप में चिन्हित किया जाता है। जो हैकिंग की कार्रवाई को अंजाम देता है उसे हैकर कहते हैं।

हैकिंग की प्रकृति आमतौर पर तकनीकी होती है; जैसे कि मालवेयर बनाना जो ड्राइव-बाय अटैक में मालवेयर एकत्रित करता है, इसमें उपयोगकर्ता संपर्क की आवश्यकता नहीं होती। हैकर उपयोगकर्ता को दुर्भावनापूर्ण लिंक पर क्लिक करने या व्यक्तिगत डेटा प्रदान करने के लिए मनोविज्ञान का सहारा लेते हैं। हैकरों को आमतौर पर 'टोपी' रुपक द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। जैसे व्हाइट हैट हैकर, ग्रे हैट हैकर, ब्लैक हैट हैकर। ये शब्द प्राचीन पश्चिमी स्पेगेटी सभ्यता सभ्यता से आते हैं, जहाँ बुरा आदमी चरवाहे की काली टोपी पहनता था और अच्छा आदमी सफेद टोपी पहनता था। दो मुख्य कारक ऐसे हैं जो हैकरों का प्रकार निर्धारित करते हैं; पहला उनकी प्रेरणा और दूसरा वह कानून का पालन कर रहे हैं या नहीं।

ब्लैक हैट हैकर : ये सभी हैकरों की तरह आमतौर पर कंप्यूटर नेटवर्क में सेंध लगाने और सुरक्षा के नियमों को दरकिनार करने के बारे में व्यापक जानकारी एकत्र करते हैं। ऐसे हैकर मालवेयर, जो इन प्रणालियों तक पहुंच प्राप्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक विधि है, लिखने के लिए भी जिम्मेदार होते हैं। ब्लैक हट हैकर की प्राथमिक प्रेरणा व्यक्तिगत अथवा वित्तीय लाभ के लिए होती है, परंतु कई बार वे साइबर जासूसी अथवा साइबर अपराध के रोमांच आदि के भी आदी होते हैं। ये मालवेयर फैलाने वाले अनुभवहीन से लेकर अनुभवी तक हो सकते हैं। इनका उद्देश्य डाटा चोरी करना, वित्तीय एवं व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करना होता है। ब्लैक डाटा चोरी करना चाहते हैं बल्कि वे डाटा को संशोधित अथवा नष्ट करना भी चाहते हैं।

व्हाइट हैट हैकर : ये बुरे उद्देश्यों की जगह अच्छे कार्यों के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करना चुनते हैं। व्हाइट हैट हैकरों को 'नैतिक (एथिकल) हैकर' के रूप में भी जाना जाता है। इन्हें कभी-कभी कंपनियों, कर्मचारियों या ठेकेदारों द्वारा सुरक्षा विशेषज्ञों के रुप में भुगतान किया जाता है, ये हैकिंग के माध्यम से सुरक्षा में कमी को खोजने का कार्य करते हैं। व्हाइट हैट हैकर, ब्लैक हैट हैकर की तरह ही हैकिंग के समान तरीकों को, एक अपवाद के साथ सिस्टम के मालिक की अनुमति से, नियोजित करते हैं। उनकी यह विधि इस प्रक्रिया को पूरी तरह से कानूनी बनाता है। ये हैकर पैठ परीक्षण, इन-प्लेस सुरक्षा प्रणालियों का परीक्षण कर विभिन्न कंपनियों के लिए भेदता का आकलन करते हैं। नैतिक (एथिकल) हैकिंग के लिए पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण, सम्मेलन और प्रमाण पत्र भी प्रदान किए जाते हैं।

ग्रे हैट हैकर का तात्पर्य उन हैकरों से है जो न तो ब्लैक हैट हैकर और न ही व्हाइट हैट हैकर होते हैं। वास्तव में ग्रे हैट हैकर ब्लैक हैट हैकर एवं व्हाइट हैट हैकर का मिश्रण है। ग्रे हैट हैकर अक्सर मालिक की अनुमति के बिना किसी सिस्टम में कमियों को ढूँढते हैं। इन्हें ढूँढने के बाद वह मालिक को उक्त कमियों की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं और उसके बदले में शुल्क का अनुरोध करते हैं। यदि मालिक उन्हें इसके लिए शुल्क का भुगतान नहीं करता है तो ये हैकर कभी-कभी सिस्टम में पायी गयी कमियों को दुनिया के सामने ला देते हैं। इस प्रकार के हैकर स्वाभाविक रुप से अपने इरादों के दुर्भावनापूर्ण नहीं होते, परंतु वे बस अपनी खोजों से कुछ पाने की चाह रखते हैं। साधारणत: ग्रे हैट हैकर किसी सिस्टम में खोजी गयी कमियों का लाभ नहीं उठाते। हालांकि इस प्रकार की हैकिंग को अवैध माना जाता है, क्योंकि हैकर को सिस्टम की कमियों को पता करने से पहले मालिक की अनुमति नहीं होती है।

यद्यपि हैकर शब्द नकारात्मक अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयोग किया जाता है, परंतु यह याद रखना चाहिए कि सभी हैकर एक जैसे नहीं होते। यदि व्हाइट हैट हैकर, जो सिस्टम की कमियों की तलाश ब्लैकेट हैकर की जानकारी से पहले कर देते हैं, नहीं होते तो संभवत: साइबर अपराधियों द्वारा इन कमियों से लाभ उठाने और संवेदनशील डाटा एकत्र करने की गतिविधियाँ बहुत अधिक होतीं।

बच्चों में नशे की रोकथाम हेतु हमारी भूमिका

जगजीत सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

जीवन एक साधारण सी जलती मोमबत्ती नहीं, यह विशाल प्रकाश ज्योति है। इससे अधिक से अधिक प्रकाश पैदा कर इसकी रोशनी में हमें और भी उज्जवल जीवन जीने की प्रेरणा लेनी चाहिए। इस प्रकाश ज्योति को आलोकित रखने के लिए हर नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह इसके लिए उचित यत्न-प्रयत्न करता रहे। बच्चों को यदि बचपन से ही सुयोग्य, धार्मिक तथा सदाचारिता की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया जाय तो संभव है वह अनैतिक आचरण, गतिविधियों और नशा की लत आदि से दूर रह सकेगा। ऐसा होने से हम एक स्वस्थ समाज की बनावट की परिकल्पना कर सकते हैं। अन्यथा मनुष्य के जीवन में हर स्तर पर भटकाव की पूरी संभावना बनी रहती है।

अक्सर देखने-सुनने को मिलता है कि कुछ असामाजिक तत्व अधिक तथा तत्काल पैसा पाने की चाह में बच्चों को नशे की ओर कुप्रेरित करके उनका सारी उम्र शोषण करते रहते हैं। इतना ही नहीं ये तत्व उन बच्चों की जिंदगी बर्बाद तथा बेकार करके रख देते हैं। ऐसी कुत्सित प्रयासों को रोकने तथा हरकतों के ऊन्मूलन के लिए सरकार ने कई नियम बनाए हैं। इन नियमों को लागू करने के पीछे भी मंशा यही रही है कि इनकी अनुपालना कराकर नशा करने वालों को हतोत्साहित किया जा सके और एक नशा मुक्त समाज बनाया जा सके। परंतु आज भी असामाजिक तत्वों के ऐसे कुत्सित प्रयसों का पूर्ण ऊन्मूलन नहीं हो पाया है।

शराब के नशे के अलावा आजकल विशेषकर युवा पीढ़ी कई अन्य प्रकार के नशे की गिरफ्त में फंसती जा रही है। युवाओं को इससे बचाने के लिए और ऐसी स्थिति से निपटने के लिए सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर जन-चेतना और सामुदायिक कार्यक्रमों को चलाने की आवश्यकता है। इसके साथ-साथ और जन-भागीदारी के माध्यम से समाज के हर व्यक्ति को नशा से होने वाले के घातक प्रभावों के प्रति सचेत किया जाना चाहिए। बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में भी नशा से होनेवाले नुकसान एवं इससे बचने संबंधित पाठ को और व्यापक होना चाहिए ताकि उन पर बाहरी जीवन अथवा कुरीतियों का प्रभाव असरदार न हो।

बच्चों को खेलों से जुड़ने-जोड़ने हेतु प्रोत्साहित कर उसके लिए रचनात्मक वातावरण के निर्माण में हम अपनी भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्तियों को ध्यान से देखने-सुनने और उन्हें इसके लिए प्रशंसा के दो शब्द कहने से भी उनकी रचनात्मकता में वृद्धि सम्भव है। मां-बाप से शुरु होकर सरकारें विभिन्न स्तरों पर अपना योगदान बखूबी निभा सकती हैं। परंतु इन सब के अतिरिक्त समाज के हर व्यक्ति को आगे आकर, इसे अपना कर्तव्य समझकर इस नेक कार्य में भाग लेना पड़ेगा। इसे समर्पित सेवा समझ कर करना पड़ेगा, तभी हम अपने बच्चों को और आने वाली पीढ़ी के लिए एक नशा मुक्त, सद्गुण से भरपूर जीवन और समाज दे सकते हैं।

सतर्कता शपथ लेते कार्यालय के अधिकारी एवं कार्मिक गण

अतुकांत

श्री कृष्णा जी पाण्डेय
क. हिंदी अनुवादक

कहने वाला था
आज कुछ
पर कहा
कुछ भी नहीं

कोई नहीं
आज नहीं तो
किसी और दिन
कुछ तो कहेगा

वैसे कहने से पहले
वह सुनता है
बड़े ही धैर्य से
अत्यंत धीरज के साथ

और यह तो है ही
कि कहने से पहले
गुनता है
मग्न होकर ध्यान से

आप भले ही
एकालाप कहो उसके कहे को
पर कहना उसका
कहना मात्र नहीं होता

उसका कहना
'वचन' होता है
जिसे सुनने के साथ-साथ
ससमय करना ही पड़ता है।

स्वच्छता पखवाड़ा - 2020 में शामिल अधिकारी एवं कर्मचारी गण

"स्वच्छता पखवाड़ा" का आयोजन

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा सेक्टर-34ए, चंडीगढ़ स्थित मुख्य कार्यालय, पासपोर्ट सेवा केंद्र, चंडीगढ़, अंबाला तथा लुधियाना में दिनांक 01 से 15 जनवरी, 2020 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित 'स्वच्छता पखवाड़ा' के दौरान दिनांक 04.01.2020 को पासपोर्ट कार्यालय ने स्थानीय निकाय के सहयोग से पासपोर्ट कार्यालय, सेक्टर 34ए, चंडीगढ़ परिसर के बाहरी क्षेत्र की साफ-सफाई, मानव शृंखला, एवं जागरूकता रैली की। इस अवसर पर क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी श्री शिवास कविराज, उप पासपोर्ट अधिकारी श्री अमित कुमार रावत एवं उप पासपोर्ट अधिकारी श्री अमर नाथ सहित सैनिटरी इंस्पेक्टर, चंडीगढ़ और अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों ने श्रमदान किया।

पत्रिका के तीसरे अंक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

कलाकृतियां

अनन्या साहू (पुत्री - प्रफुल चंद्र साह)

काव्य सूद (पुत्र - रविंदर कुमार)

लायरा (पुत्री - राजीव खेतरपाल)

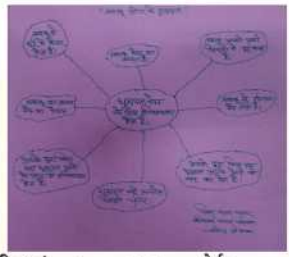

शिशु रंजन कुमार (क. पासपोर्ट सहायक)

कश्यप कुमार (पुत्र - प्रफुल चंद्र साह)

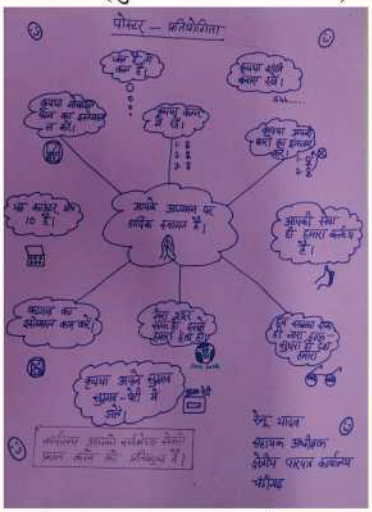

रेनू यादव (सहायक अधीक्षक)

गौरिका (पुत्री - राजीव खेतरपाल)

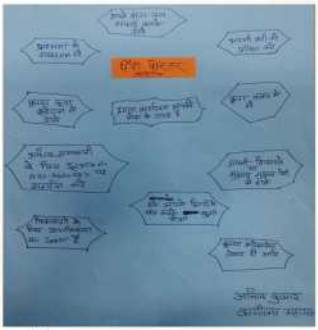

अनिल कुमार (का. सहायक)

'विश्व हिंदी दिवस' (10 जनवरी, 2020) के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय विदेश राज्य मंत्री द्वारा कार्यालय को पुरस्कृत किया गया। कार्यालय की ओर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री शिवास कविराज (भा.पु.से.), क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी चंडीगढ़ एवं श्री कृष्णा जी पाण्डेय, क. हिंदी अनुवादक

पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात तत्कालीन अपर सचिव (पीएसपी) एवं मुख्य पासपोर्ट अधिकारी के साथ चंडीगढ़, बेंगलूरु और भोपाल के क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी

SABI GRAPHICS 8968091371